अहिंसा, आगम और विज्ञान से आलोकित श्रेष्ठतम पत्रिका

भाव विज्ञान

BHAV VIGYAN

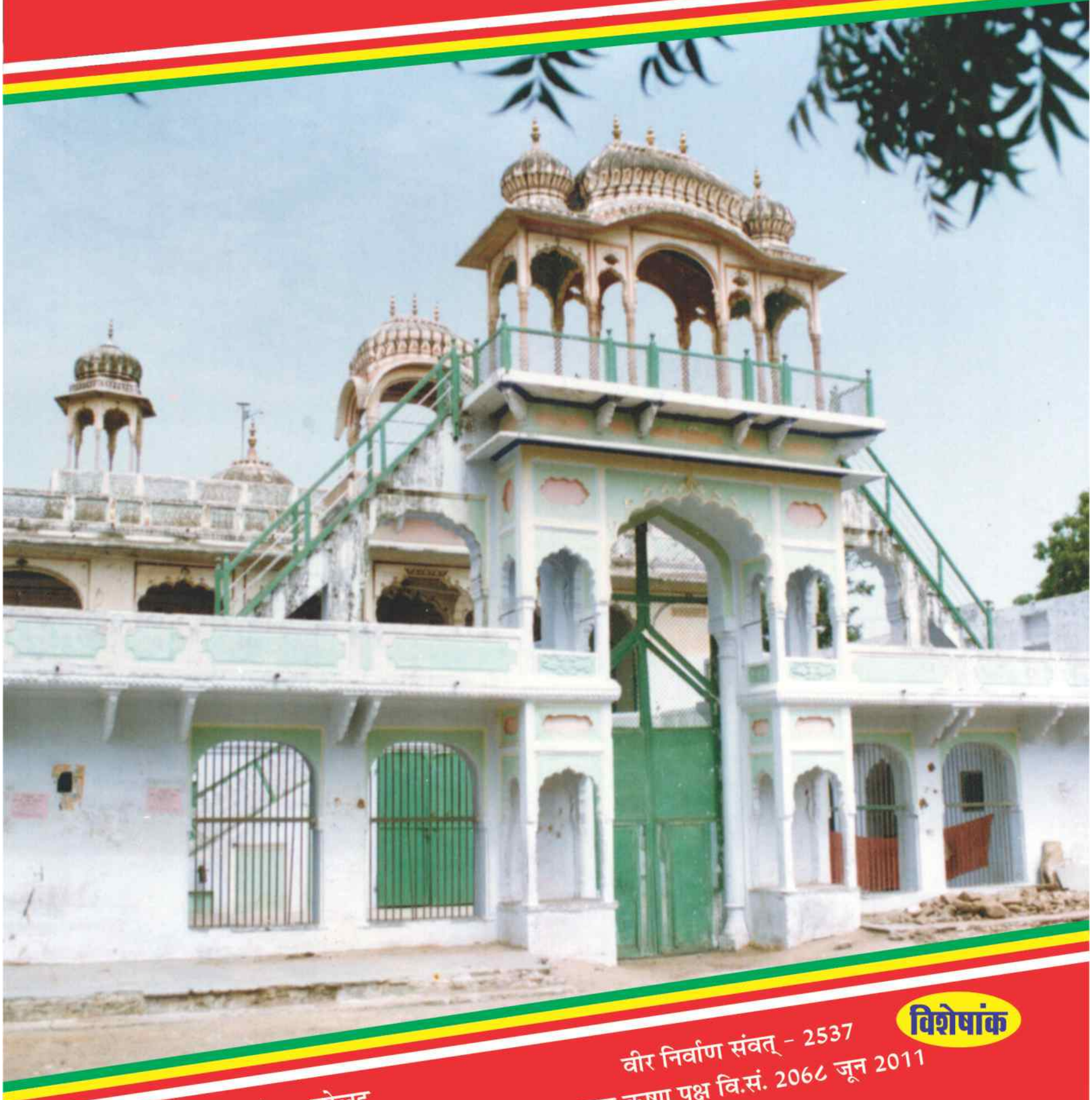

विशेषांक

वीर निर्वाण संवत् - 2537

अषाढ़ कृष्णा पक्ष वि.सं. 2068 जून 2011

मूल्य : 10/-

वर्ष : पाँच

अंक : सोलह

मूकमाटी

लज्जा के घूँघट में
डूबती-सी कुमुदिनी
प्रभाकर के कर-छुवन से
बचना चाहती है वह;
अपनी पराग को-
सराग-मुद्रा को-
पाँखुरियों की ओट देती हैं।

लो!.... इधर .....!
अध-खुली कमलिनी
डूबते चाँद की
चाँदनी को भी नहीं देखती
आँखें खोल कर।
ईर्ष्या पर विजय प्राप्त करना
सब के वश की बात नहीं,
और ...... वह भी .....
स्त्री-पर्याय में-
अनहोनी सी..... घटना !

आगामी प्रमुख पर्व एवं तिथियाँ

5 जुलाई	: आचार्य विद्यासागर मुनि दीक्षा	13 अगस्त	: रक्षाबंधन, षोडशकारण व्रत प्रारंभ
7 जुलाई	: भ. नेमीनाथ मोक्ष कल्याणक	2-11 सितम्बर	: दशलक्षण व्रत प्रारंभ
8-15 जुलाई	: अष्टान्हिका व्रत	4, 11 सितम्बर	: रवि व्रत
10,17,24,31 जुलाई	: रविव्रत	5 सितम्बर	: भ. पुष्पदंत मोक्षकल्याणक
14 जुलाई	: चातुर्मास कलश स्थापना	7 सितम्बर	: सुगंध दशमी
16 जुलाई	: वीरशासन जयंती	10-12 सितम्बर	: रत्नत्रय व्रत
6 अगस्त	: भ.पार्श्वनाथ मोक्षसप्तमी / कल्याणक	11 सितम्बर	: भ. वासुपूज्य मोक्षकल्याणक
7,14,21,28 अगस्त	: रविव्रत	13 सितम्बर	: षोडशकारणव्रत पूर्ण, क्षमावाणी

भगवान महावीर आचरण संस्था समिति

रजि.नं.: 01/01/01/17654/07

कार्यालय : एम-8/4 गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल फोन : 0755-2673820

सम्पर्क सूत्र :

महामंत्री **डॉ. अजित जैन** 94256 01161

संयुक्त सचिव **अरविन्द जैन,** पथरिया दमोह

कोषाध्यक्ष **इंजी. महेन्द्र जैन**

उपाध्यक्ष **राजेश जैन 'रज्जन'** दमोह

अध्यक्ष **डॉ सुधीर जैन** 9425011357

सदस्य -**पवन जैन, श्रीमती संगीता जैन**

संरक्षक : श्रीमती शीलरानी नायक, पनागर, श्री सुनील कुमार जैन, श्री महावीर प्रसाद जैन, सतना, श्री राजेन्द्र जैन कल्लन, दमोह, **विशेष सदस्य : दमोह :** श्री मनोज जैन दालमिल, श्री महेश जैन दिगम्बर, श्री संजीव जैन शाकाहारी, श्री तरुण सर्राफ, श्री पदम लहरी **सदस्य : जयपुर :** श्री शांतिलाल वागड़िया, **भोपाल :** श्री अविनाश जैन, श्री अरविंद जैन, श्री अनेकांत जैन।

रजिस्ट्रेशन क्रं. **MPHIN/2007/27127**

त्रैमासिक

भाव विज्ञान

(BHAV VIGYAN)

वर्ष-पाँच
अंक-सोलह

शुभाशीष

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी के धर्म प्रभावक परम शिष्य परम पूज्य **मुनिश्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज ।**

● *परामर्शदाता* ●
डॉ. प्रोफेसर एल.सी. जैन
जबलपुर, मोबा.: 9425386179
पंडित मूलचंद लुहाड़िया
किशनगढ़ (राजस्थान) मोबा.: 9352088800
● *सम्पादक* ●
श्रीपाल जैन 'दिवा', भोपाल
फोन: 4221458, 9893930333, 9977557313
● *प्रबंध सम्पादक* ●
डॉ. सुधीर जैन, प्राध्यापक
85, डी.के. काटेज, ई-8 एक्सटेंशन, अरेरा कालोनी, भोपाल मो. 9425011357
● *सम्पादक मंडल* ●
डॉ. सी. देवकुमार, प्रमुख वैज्ञानिक, नई दिल्ली
पं. जय कुमार 'निशांत', टीकमगढ़ (म.प्र.)
डॉ. अजित कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
डॉ. संजय जैन, पथरिया, दमोह (म.प्र.)
डॉ. श्रीमती अल्पना जैन (मोदी), ग्वालियर (म.प्र.)
इंजी. महेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
श्री सुनील वेजीटेरियन, दमोह (म.प्र.)
● *कविता संकलन* ●
पं. लालचंद जैन 'राकेश', भोपाल

● *प्रकाशक* ●
श्रीमती सुषमा जैन धर्मपत्नी डॉ. अजित जैन
MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा, भोपाल
फोन : 0755-2673820, 9425601161
email : bhav.vigyan@yahoo.co.in

● *आजीवन सदस्यता शुल्क* ●

शिरोमणी संरक्षक	:	51,000
पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक	:	24,500
परम संरक्षक	:	21,000
पुण्यार्जक संरक्षक	:	18,000
सम्मानीय संरक्षक	:	11,000
संरक्षक	:	5,100
विशेष सदस्य	:	3100
आजीवन सदस्य	:	1100

कृपया सदस्यता शुल्क प्रकाशक के एवं रचनाएँ प्रबंध सम्पादक के पते पर भेजें।

पल्लव दर्शिका

विषय वस्तु एवं लेखक	पृष्ठ
1. धर्म प्रभावना एवं सुसंस्कारों के सूर्य ''सम्पादकीय'' — श्रीपाल जैन 'दिवा'	2
2. ध्यान का आधार द्रव्य मुनि आर्जवसागर	4
3. जैन न्यायविदों की गणितीय न्याय में पहुँच प्रो. एल.सी. जैन	7
4. सम्यक ध्यान शतक मुनि आर्जवसागर	11
5. गणितसार संग्रह प्रो. एल.सी. जैन	12
6. आर्थिक विकास, उदारीकरण एवं वैश्वीकरण का अहिंसात्मक श्रेष्ठ जीवन शैली पर प्रभाव डॉ. अजित कुमार जैन	16
7. हंसी एक मानसिक व्यायाम डॉ. संजय कुमार जैन	18
8. विश्व शान्ति में युवा शक्ति की भूमिका कु. आराधना जैन	20
9. जैन तीर्थंकर और उनके लांछन डॉ. श्रीमती अल्पना जैन मोदी	21
10. राष्ट्रपति संदेश	24
11. जैन गणित-जटिलता से सरलता की ओर श्रीपाल जैन 'दिवा'	25
12. अहिंसा प्रेमी स्वयं जानें, पहचानें एवं त्यागें....! साभार : हम कितने शाकाहारी	26
13. समाचार	28
14. प्रश्नोत्तरी	31

लेखक एवं विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
भाव विज्ञान से संबंधित समस्त निर्णयों/न्यायों के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल ही मान्य होगा।

सम्पादकीय

धर्म प्रभावना एवं सुसंस्कारों के सूर्य

-श्रीपाल जैन 'दिवा'

धर्म प्रभावना एवं सुसंस्कार आत्मशोधन के पवित्र स्रोत हैं। इन स्रोतों के सम्राट दिगम्बर साधु होते हैं। इनका त्याग, तपस्या, नगन, तन, मौन रूप से प्रभावक धर्म प्रभावना करता ही रहता है। इनकी चर्या आचरण का पाठ बिना बोले पढ़ाती रहती है। इसीलिए मेरी कलम इन्हें धर्म प्रभावना एवं सुसंस्कारों के सूर्य के रूप में लिखती है। इनके नगन तन का अभिषेक धूप के माध्यम से सूर्य प्रतिदिन करता है और अपने को धन्य मानता है। वह अपनी धूप रूपी औषधि से उनके तन को स्वस्थ रखकर डाक्टर की भूमिका अदा करता है। वह महान वैयावृत्ति कर सौभाग्य सा प्राप्त करता रहता है। जिनके तन को हवा शुद्ध करती है, सहनशीलता में अभिवृद्धि करती है। उनके तन को स्पर्श कर वायु भी पावनता में बदलती है। जहाँ वे विराजमान होते हैं वहाँ के आसपास के जीवों की आत्माएँ आत्म शुद्धि की अनुभूति करने लगती हैं। वे शुभ चिन्तन की ओर उन्मुख होने लगती हैं और पुण्य संचय स्वयमेव करने लगती हैं। उनके आचरण की यात्रा प्रारम्भ कर देते हैं शुभाचरण के फूल खिलने लगते हैं। क्योंकि कवि कहता है -

पैर	-	पर
जो पैर	-	जो चरण पुजते हैं
पुजते हैं	-	वे
वे संसार पाते हैं	-	मोक्ष जाते हैं।

अर्थात् - उनकी मोक्ष यात्रा प्रारम्भ हो जाती है। जिनको मोक्ष की यात्रा करना हो उन्हें अपने चरणों से आचरण का श्रम प्रारम्भ कर देना चाहिए। यह सब दिगम्बर मुनि के प्रति श्रद्धा दर्शन से प्राप्त किया जा सकता है। उनके सत्संग और उनकी देशना को सुनना-गुनना-अपने अंदर उतारना और उन पर आचरण करना तो परम सौभाग्य की बड़ी बात है। ऐसा अवसर प्रतिवर्ष चातुर्मास के रूप में हमारे जीवन में घर बैठे आता है। दिगम्बर साधु अहिंसा के महान साधक होते हैं। सूक्ष्म हिंसा का भी जिनको त्याग होता है। अतः वर्षा ऋतु में विहार-यात्रा को स्थगित कर किसी एक स्थान पर या निश्चय किये गये योग्य क्षेत्र में रुकते हैं। जिससे वर्षा ऋतु में उत्पन्न अनेक छोटे-छोटे जीवों की उत्पत्ति के कारण उनकी हिंसा से बच सकें और धर्म प्रभावना व सुसंस्कारों की देशना से अन्य आत्म कल्यार्थी जीवों का मार्ग प्रशस्त कर सकें। जैसे महावीर जयंती, अक्षय तृतीया, श्रुतपंचमी जैसे महान पर्व साधु के सान्निध्य में मनाये जाते हैं।

उनकी देशना व शुभाशीष से श्रावक-श्राविका सुसंस्कारों से माला-माल हो जाते हैं वैसे ही वर्षायोग में सोलह कारण व दश लक्षण पर्वों के सद्भाव से तप-त्याग की साधना कर धन्य हो जाते हैं। उनके ज्ञान व आचरण की यात्रा की ओर उन्मुख हो जाते हैं। सत्पात्रों को आहार दान कर पुण्यार्जन के शुभ अवसर प्राप्त करते हैं। सम्पूर्ण चातुर्मास ऐसे पुण्यार्जन के अवसरों से भरा रहता है। ये चातुर्मास ही हमें तप-त्याग-ज्ञान के धनी मुनियों का सान्निध्य प्रतिवर्ष उपलब्ध करवाते हैं। ये ही हमारे चलते-फिरते तीर्थ हैं ये ही धर्म प्रभावना एवं सुसंस्कारों के सूर्य हैं। ये ही सत्संग एवं ज्ञान के सागर हैं। इनके सत्संग से हमें अपनी आत्मशुद्धि के अवसर प्राप्त होते हैं। इनके ही चरण हमारे गृह आचरण को पवित्र बनाकर निवृत्ति की ओर हमारा मार्ग प्रशस्त करते हैं। हम सब उनके पथ पर अग्रसर होते रहें- इस मंगल भावना के साथ विराम!

शरीर के साथ आत्मा का भी उपचार करना होगा-मुनिश्री

अलवर, 6 मार्च (का.स.)। दिगम्बर मुनिराज श्री आर्जवसागर जी महाराज ने कहा है कि अपने शरीर को स्वस्थ रखने व रोग का निदान कराने की तो अक्सर आदमी को चिन्ता रहती है मगर वह अपनी आत्मा के बारे में लापरवाह हो गया। तभी तो संसार में पाप प्रवृत्तियां पनप रही हैं। आदमी को आदमी से ही खतरा पैदा हो रहा है। इसलिए शरीर के साथ आत्मा का भी उपचार कराना बहुत जरूरी है। तभी सुख-शांति से जीवन का निर्वहन कर पाओगे।

दि. मुनिराज आज प्रातः जैन भवन में दिगम्बर जैन महासमिति व रोटरी क्लब द्वारा आयोजित घुटना दर्द राहत शिविर के शुभारंभ मौके पर अपना मंगल उद्बोधन दे रहे थे। उन्होंने कहा कि जिस तरह रोगी को उपचार करानें के लिए डॉक्टर या वैद्य के पास जाना पड़ता है, इसी तरह अपनी आत्मा पर चिपके हुए भव-भव के अशुभ कर्मों से छुटकारा पाने के लिए संतों के पास जाना होगा। जो स्वयं कर्मों की निर्जरा के लिए कड़ी साधना कर रहे हैं, वे ही तो आत्मा का सही उपचार बता पाएंगे। ध्यान रखना-शरीर यदि निरोगी न बन सका तो कोई बात नहीं लेकिन आत्मा का यदि इस मनुष्य जन्म में भी उपचार नहीं किया तो फिर पता नहीं आगे मौका मिलेगा भी या नहीं।

आर्जव-वाणी

ध्यान का आधार द्रव्य

-प्रवचन : मुनिश्री आर्जवसागर

गतांक से आगे................

''**सम्यग्ज्ञानी होय बहुरि, दृढ़ सम्यक्-चारित लीजे।**'' ऐसे महान ज्ञान के साथ चारित्र आयेगा तभी उस ज्ञान की शोभा है नहीं तो केवल सुगंध रहित पुष्प के समान है। ठीक है गुरुदेव। जब वह भव्य जाने लगा तब गुरुदेव कहते हैं कि अरे! ऐसे ही जा रहे हो कुछ नियम तो ले लो! कुछ गुरु दक्षिणा तो देकर जाओ! वह कहता है कि क्या दे दें गुरुदेव आपको; क्योंकि आप तो अपने पास कुछ रखते भी नहीं हैं धन, वैभव से तो आप बिल्कुल दूर हैं क्योंकि आप निर्ग्रन्थ हैं फिर आप जो मांगें सो देने को तैयार हूँ। गुरुदेव ने कहा पैसा ही गुरु दक्षिणा है ऐसा नहीं है; कोई नियम, संयम, चारित्र ले लो वही गुरु दक्षिणा होगी ऐसा कहा। तो क्या लेना है दे दीजिए आप। नहीं बेटा मैं नहीं देता तुम अपने मन से लेलो। तब उसने सोचा, चलो जीवन पर्यन्त के लिए एक नियम लेता हूँ, उसने ऐसा नियम लिया जो कि गुरुदेव ने पहले ही कहा था कि ध्यान करने के लिए मन की एकाग्रता जरूरी है और एकाग्रता हेतु संयम आवश्यक है। साथ ही अपने शरीर की जो शक्ति है उसका उपयोग भी प्राथमिकता से अपने ध्यान के लिए करना चाहिए अपनी एनर्जी को (शक्ति को) व्यर्थ नहीं खोनी चाहिए। ब्रह्मचर्य के माध्यम से उत्कृष्ट ध्यान की उपलब्धि होती है वह ऊर्जा अधोगति की ओर न जाए ऊर्ध्वगति की ओर हो अन्तस् की ओर हो इसलिए ब्रह्मचर्य व्रत धारण करना चाहिए। चलो इतनी अधिक शक्ति तो नहीं अपने पास लेकिन कम से कम साधना तो प्रारम्भ कर ही देते हैं। और अपने मन को निर्मल बनाने के लिए आजीवन के लिए शुक्लपक्ष में ब्रह्मचर्य व्रत को अंगीकार कर लिया। शादी तो अभी नहीं हुयी है, क्या मालूम कौन-सा मार्ग मिलेगा मुझे? मोक्ष-मार्ग जल्दी से नहीं मिले तो कम से कम शुक्ल पक्ष में ब्रह्मचर्य व्रत तो रखेंगे गुरु दक्षिणा में यही दिया और देकर घर आ गया। आकर के धर्मध्यान में लवलीन हुआ। सभी लोग भी धर्म लाभ ले रहे थे। स्वाध्याय कर रहे थे। बिल्कुल सुबह चार बजे उठना, सामायिक, ध्यान, स्तोत्र पाठ करना फिर शुद्ध होकर पूजन, स्वाध्याय, शुद्ध आहार और सामायिक फिर दोपहर के स्वाध्याय बाद शाम को भोजन, फिर प्रतिक्रमण, भजन, आरती, फिर सामायिक, रात्रीकालीन स्वाध्याय, जाप ऐसे सब कुछ चल रहा था। अध्ययन और अध्यापन से बड़ी प्रभावना हो रही थी।। गाँव-गाँव के लोग लाभान्वित हो रहे थे। चलिए अब अन्य एक जगह की और बात करें। एक जगह आर्यिकाजी का संघ आया हुआ था। बहुत प्रभावना हो रही थी। कई छोटे-छोटे नियम संयम भी ले रहे थे लोग। लाभ लेते-लेते वहाँ पर जब उनका गमन होने लगा तब एक कन्या बोलती है जो जवानी की ओर बढ़ रही थी। तो उसके मन में आया क्यों न हो इन माताजी के पास रहकर इन जैसा ज्ञान प्राप्त कर लें और वह बोली कि हे माताजी! हमें आशीर्वाद दें तो मैं भी आपके पास रहकर के आप जैसा ज्ञान प्राप्त कर सकूँ। माताजी ने सोचा कि यह कन्या गंभीर तो है, शान्त है, चलो अपने पास रख लेते हैं लेकिन उसके पहले माता-पिता की अनुमति भी आवश्यक है। जाकर के उसने गृह में पूछा तो माता-पिता ने सहर्ष स्वीकार कर

लिया और कहा कि अच्छा है अच्छा ज्ञान प्राप्त करो साथ ज्ञान प्राप्त करके घर आ जाना हमें भी ज्ञान देना। अनुमति मिल गयी बस चली गयी गुरुणी के साथ क्रम से शास्त्रों का अध्ययन हुआ। जब श्राविका के योग्य अध्ययन पूर्ण हुआ फिर वापिस घर आने लगी तब वही बात आर्यिका जी ने पूछा कुछ गुरु दक्षिणा तो देकर जाओ; हाँ! क्या गुरु दक्षिणा देऊँ कहिए चूंकि आप तो परिग्रह के त्यागी हैं अतः धन पैसा लेंगी नहीं; फिर क्या देऊँ? गुरुणी ने कहा कि धन-पैसा देना ही गुरु दक्षिणा है ऐसा नही, कुछ नियम, संयम ले लो। तो आप दे दीजिए। नहीं अपने मन से ले लो। तो उसने कहा मैं कृष्ण पक्ष में ब्रह्मचर्य व्रत पालन करूँगी और आशीर्वाद मिल गया। राजी खुशी घर आ गयी। अच्छे ढंग से धर्म ध्यान में निरत हो गयी। धर्म ध्यान षडावश्यक करने-कराने में प्रभावना खूब चल रही थी। लेकिन कब तक कन्या को घर पर रखेंगे लोग, अगर मोक्ष-मार्ग में चली गयी तो निश्चिन्त भी हो जाते हैं माता-पिता। नहीं तो परम्परा से संसार मार्ग तो है ही। कब तक घर में रहेगी कन्या उनको चिंता सताने लगी कि इसका विवाह करना है। और योग्य पति मिल जाए जिससे इसका नियम संयम पलता रहे। इसका धर्म सुरक्षित रहे इसको कोई बाधा न हो ऐसा कोई सुयोग्य कुल मिले, धार्मिक परिवार मिले, ऐसी खोज में निकले पिताश्री। खोजते-खोजते उसी नगर में पहुँचे जहाँ जिसने गुरु के पास रहकर धर्माचरण पाया था। चलो देखते हैं कुंडली मिलती है कि नहीं गुण धर्म मिलते हैं कि नहीं। नहीं मिले तो कुछ गड़बड़ हो जाती है। डॉयवर्स वगैरह हो जाता है। गुण धर्म मिल जाय तो अच्छा रहेगा नहीं तो गृह में महाभारत होने लगेगा। गुण धर्म मिलाने लगे। भाग्य से दोनों के गुण धर्म मिल गये। सगाई हो गयी और शादी भी हो गयी। अपन तो उस मार्ग में गए ही नहीं हैं तो अपन जानते भी नहीं ज्यादा कि कैसे हुई क्या हुई? सब हो गया घर में बहु बनकर आ गयी। एक कमरे में दोनों बैठकर एकान्त में बात करते हैं कि किसका कितना नियम है जिससे कि अपन उसमें सहयोगी बन सके तो पत्नी ने पति से पूछा बताइए जिन गुरुदेव के पास आपने स्वाध्याय किया था उनसे आपने कौन से नियम, संयम लिये थे? तो पति ने बोला हाँ मैंने आजीवन शुक्ल पक्ष में ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार किया है! सुनकर उस बहु को बहुत आनन्द हो गया। भाव तो था ही कि हम आर्यिका बन जायें नहीं हुआ तो पापों से अलिप्त बने रहेगें और अन्त में वह साधना हमको पूर्ण रूप से संयम दिलायेगी। पति ने पूछा कि तुम्हारा क्या नियम है उसने कहा मैंने भी गुरुणी के पास आजीवन कृष्ण पक्ष में ब्रह्मचर्य व्रत लिया है तो पति देव को बहुत आनन्द हो गया। चलो सोचा ही था कि मुनि पद का लाभ हो अब संसार से अलिप्त रहकर उसी पद की साधना करेंगे। देखिए शादी होने के बाद भी दोनों ब्रह्मचर्य व्रत से युक्त रहे और दोनों भाई-बहन के समान घर में रहकर मोक्ष मार्ग पर चलने की साधना करने लगे। अब एक से दो मिल गये तो धर्म की प्रभावना और अधिक होने लगी। एक महिलाओं को पढ़ाती और एक पुरुषों को पढ़ाते। गाँव-गाँव से भी बुलावा आता। नित्य प्रति सामायिक, पूजन, सामूहिक स्वाध्याय करते चले जाते। प्रशस्त भावना और प्रभावना के साथ धीरे-धीरे चार, पाँच वर्ष बीते। सास तो कुछ तेज स्वभाव की थी। वह बोलने लगी कि कैसी बहू आयी है घर में अभी तक तो

कोई सन्तान नहीं दिखती। अब बताओ भैया वे लोग तो कितने संयम से रह रहे हैं यह कौन जाने। धीरे-धीरे दिन बीत रहे हैं प्रभावना बढ़ रही है। चारों तरफ बहुत प्रशंसा थी। एक दिन क्या हुआ कि एक व्रती महिला थी उसके यहाँ प्रतिदिन चौका रहता ही था क्योंकि व्रती तो थी ही। पहले जमाने में तो सबके घर में शुद्ध भोजन ही बनता था। शुद्ध वस्त्रों से भोजन बनाते थे और करते थे। आज-कल के लोगों की बात क्या कहें लेकिन पहले काल में तो रोज वस्त्र धोते थे रोज पहनते थे। ज्यादा वस्त्रों का ज्यादा परिग्रह भी नहीं रखते थे, योग्य काल में पड़िगाहन करने खड़े हो जाते थे। भोजन करने के पहले द्वारापेक्षण करते ही थे। आहार बेला निकलने के बाद ही श्रावक लोग आहार ग्रणह किया करते थे। ''मुनि को भोजन देय फिर निज करहिं अहारे'' मुनियों की आहार बेला टलने के बाद ही आहार करते थे। वहाँ पर भी यही हो रहा था। तो वह एक वृद्ध व्रती महिला रोज पड़िगाहन करने खड़ी होती थी और प्रतिदिन कुएँ से पानी लाना अच्छे शुद्ध ढंग से मोटे कपड़े से छानकर जीवानी को जहाँ से पानी निकाला था वहीं पर विधिवत् छोड़ना आदि जलगालन क्रिया किया करती थी। एक दिन घर के लोगों के साथ हाथ में कलश लेकर पड़िगाहन के लिए खड़ी थी। उसके भाग्य से जंगल से महाराज जी आ रहे थे। ज्यों ही सामने महाराजजी दिखने लगे तो बोलने लगीं। आप लोग क्या बोलते हैं हे स्वामी! नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु, अत्र, अत्र, अत्र, तिष्ठो, तिष्ठो, तिष्ठो। बस बस यही तो सुनना चाहता था। तो आपकी इसमें कोई कमी तो नहीं है। देखो और समझ लो हे स्वामी! नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु तो ठीक है और अत्र का मतलब यहाँ। तिष्ठो मतलब रुकिए। आपने आइए कहाँ बोला? पूजा में तो बोलते हैं; वास्तव में पड़िगाहन में भी यह बोलना चाहिए, कुछ लोग बोलते भी हैं कि हे स्वामी! नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु, अत्र, अवतर, अवतर, अवतर तिष्ठ स्वामी तिष्ठ। अत्र (यहाँ) तो एक बार, और अवतर (आइए) तीन बार तथा जब पास में आ गये हों तो तिष्ठ (रुकिये) बोलना चाहिए। वरना कोई संस्कृत जानने वाला सुने तो क्या कहेगा कि क्या बोल रहे हैं ये लोग आइए तो बोल नहीं रहे हैं। इसलिए आप लोगों से बुलवाया है। हम लोग कहाँ भूल रहे हैं। इसको समझिये। तो महाराजजी हम लोग संस्कृत तो जानते नहीं है? आप कहें कि हम लोग हिन्दी में बोल देंगे कि हे स्वामी नमस्कार हो यहाँ आइए, यहाँ आइए, यहाँ आइए, यहाँ रुकिए पधारिए। आप हिन्दी में बोलेंगे तो मराठी वाले मराठी में बोलेंगे हे स्वामी नमस्कार इकड़े या, इकड़े या, इकड़े या इकड़े थाम्बा। महाराजजी को मराठी नहीं मालूम हो तो क्या जानेंगे। फिर कर्नाटक में जायेंगे तो कन्नड़ में बोलेंगे हे स्वामी! नमोस्तु इल्ली बन्हीं, इल्ली बन्हीं, इल्ली बन्हीं, इल्ली निल्लसी। बड़ा कठिन हो जायेगा। फिर तमिलनाडू जायेंगे तो तमिल में बोलेंगे कि हे स्वामी वणक्कं! इंगे वारूङगल, इंगे वारूङगल, इंगे वारूङगल, इंगे निल्लुङगल समझना बड़ा कठिन हो जायेगा। इसलिए सब जगह संस्कृत में बोलने की परम्परा है। संस्कृत तो महाराज जी क्रमशः जानते हैं। श्रावकों को भी समझना चाहिए। इसलिए मैंने बोला समझ में आया है न। अब तो कुछ परिवर्तन लाना है।

क्रमशः ....

जैन न्यायविदों की गणितीय न्याय में पहुँच

(आधुनिक न्यायशास्त्र के संदर्भ में शोधार्थियों को एक प्रेरणा)

प्रोफेसर एल.सी. जैन, जबलपुर

नवीं सदी में हुए विश्वविख्यात 'धवला' एवं 'जय धवला' टीकाओं के रचनाकार श्रीवीरसेनाचार्य ने दिगम्बर जैन आगम ग्रंथों, षट्खण्डागम एवं कषाय प्राभृत की गूढ़तम सामग्री को अभूतपूर्व रूप में प्रस्तुत कर अप्रतिम लोक-कल्याण किया । उनकी उक्त टीकाओं में अंक-गणितीय संदृष्टियां प्राप्त हैं, गणितीय न्याय शब्दों द्वारा अभिव्यक्त किया है। परन्तु शेष अर्थसंदृष्टिमय कार्य श्री नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती कृत (लगभग 10 वीं सदी) गोम्मटसार, लब्धिसार, क्षपणासार की जीवतत्व प्रदीपिका, संस्कृत टीका एवं सम्यक्ज्ञान चंद्रिका टीका के अर्धसंदृष्टि अधिकारों में उपलब्ध है।

वस्तुतः दिगम्बर जैन परम्परा के इन आगम ग्रंथों में कर्म सिद्धान्त को गणित द्वारा साधा गया है, और कर्म सिद्धान्त के गहनतम परिप्रेक्ष्यों को उद्घाटित करने हेतु न केवल गणितीय न्याय अपितु गणितीय संदृष्टियों का सुन्दरी लिपि की सहायता से भी शोध कार्य किया गया है जिसमें विश्लेषण, संश्लेषण, राशि-सिद्धान्त एवं परमाणु-सिद्धान्त आदि का प्रयोग किया गया है।

राशियों के वाक्यरूप कथन, ज्ञप्ति एवं उनके बीच स्थापित सम्बन्ध उनके स्वरूपादि की चर्चारूप व्याख्यान एवं उपाख्यान श्री वीरसेनाचार्य की एक अद्भूत प्रतिभासम्पन्न उपलब्धि है जो शताब्दियों तक पठन-पाठन एवं शोध तथा निर्णयों की भूमिकाएं अदा करती रहेंगी। किसी भी राशि, जैसे केवलज्ञान राशि, की परिभाषा, उसकी तद्रूप स्थापना और उसका ज्ञप्तियों में उपयोग जो अबाधित हो, न्याय-संगत हो, अखण्डित हो, मिथ्याभास से रहित हो, स्वबाधित न हो, परस्पर पूर्वापर विरोध से रहित हो-अपने आप में एक अतुलनीय प्रतिभा का द्योतक है।

आधुनिक विज्ञान में सापेक्षता का सिद्धान्त (Theory of relativity), परमाणु शक्ति-पुंज का सिद्धान्त (Theory of quanta) अप्रतिम ऊँचाईयों और गहराईयों तक पहुँच चुके हैं, जो बीसवीं सदी की देन हैं। इसी प्रकार आज की बीसवीं सदी की अदभुत देन राशि सिद्धान्त (Theory of sets) उतनी ही ऊँचाइयों को प्राप्त कर चुकी है। इसके प्रणेता जार्जकेण्टर (1845-1918) विश्वविख्यात हुए हैं जिनके द्वारा परिभाषित राशि को स्वबाधित कराकर बुरेली फोर्ट एवं बरट्रेण्ड रसेल (नोबेल पुरस्कार सम्मानित एवं लोक शान्ति प्रतिष्ठान स्थापक) कैण्टर के राशि-सिद्धान्त को एक बार पूर्णरूप से धराशायी कर दिया था। किन्तु आज वही राशि-सिद्धान्त प्रत्येक शाला एवं विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में सर्वप्रथम स्थान पाये हुये है।

ऐसा भी क्या रहस्य है इस राशि-सिद्धान्त में जो गत एक शती में कला-विज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी अनिवार्यता निवार्यता सिद्ध कर चुका है। व्यक्तिगत चर्चा सरल है, पर उसके समूहों की चर्चा उतनी ही गम्भीर है। व्यक्ति विशेष के गुणों का व्याख्यान सरल है, किन्तु अनेक व्यक्तियों के बीच जो सम्बन्ध स्थापित होते हैं, उनके संख्येय, असंख्येय एवं अनन्त परिप्रेक्ष्य उद्घाटित करना उतना ही कठिन है, और सर्वाधिक कठिन है उनके इन सम्बन्धों को निर्णीत कर उन्हें सत्यरूप प्रमाणित करना-आगम से अथवा प्रयोगों से जो प्रत्यक्ष एवं परोक्ष अनुमानों पर आधारित हो।

स्पष्ट है कि न्याय, छन्द, व्याकरण, आयुर्वेद, गणित, ज्योतिष आदि विद्याओं में सर्वगुणसम्पन्न श्री वीरसेनाचार्य की सुभाग्य रेखाओं में धवलाकार और जयधवलाकार होने का श्रेय था। उन्होंने राशि-सिद्धान्त के प्राय: सभी कर्म-परिप्रेक्ष्यों को समुद्घाटित किया जो शब्दों और वाक्यों की प्राकृत भाषा एवं कनाड़ी लिपि में निबद्ध हुआ। किन्तु अभी भी न्यायपूर्ण अभिप्राययुक्त कर्म-सिद्धान्त के अनेक परिप्रेक्ष्य गोम्मटसारादि की अर्थ-संदृष्टि टीकाओं में छिपे हुये गर्भित हैं जिन पर अगली पीढ़ी को कठोरतम परिश्रम कर उद्घाटित करना शेष है।

जैसे ब्राह्मी आदि लिपि भाषा को संकेतमय बनाकर ध्वनियों में नये परिप्रेक्ष्य उत्पन्न करती है, उसी प्रकार सुन्दरी आदि लिपि गणित को संकेतमय बनाकर अदृश्य एवं अनसुनी काल्पनिकतम ध्वनियों में नये परिपेक्ष्य उत्पन्न करती है। नये परिपेक्ष्य मिलते ही हम अज्ञान की परतंत्रता से ज्ञान के सुन्दरतम स्वातंत्र्य में प्रवेश करते हैं। एक बाढ़ सी आती है, उन परिप्रक्ष्यों की जिनके आलम्बन से हम उन परिणामों, पारिणामिक भावों की धाराओं में तन्मय हो जाते हैं जो मिथ्यात्व के तिमिर को छिन्न-भिन्न करती अखण्ड निर्मलता में प्रवेश करती, करा देती, कराती चली जाती है। आज का न्याय भी सुन्दरी जैसी लिपि के संकेतों में निबद्ध हुआ और अनेक अर्थों को नये रूप में उद्घाटित करता चला गया। वीरसेनाचार्य का गणितीय न्याय कनाड़ी लिपि में, भाषा में अनुबद्ध होता हुआ, आज के न्यायशास्त्रियों, वादियों के लिए एक महान् स्त्रोतरूप में उपस्थित हुआ। किन्तु कन्नड़, कर्णाटक केशवर्णी आदिकृत अर्थसंदृष्टिमय वृत्तियाँ गणित-मय पठन-पाठन की वस्तु न बन पाईं और उनके गणितीय-न्याय अभिप्रत परिप्रेक्ष्य अभी भी अप्रकाशित, अनुद्घाटित रहे आये।

इस संक्षिप्त लेख में हम मात्र एक ही 'केवलज्ञान राशि' सम्बन्धी गणितीय-न्याय का संदृष्टिमय परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत कर सकेंगे। वीरसेनाचार्य द्वारा संख्येय, असंख्येय, अनन्त कम संबंधी राशियों के परिप्रेक्ष्य उपस्थित किये गये हैं जो हमने अपने विगत कुछ लेखों में प्रस्तुत किये हैं।

प्रश्न है कि क्या किसी राशि को परिभाषित कर उसकी परिसीमाओं में अनन्तात्मक राशि को

उद्‌बोधित किया जा सकता है। ताकि वह सत्य, अस्तित्वमय एवं स्वबाधा से रहित हो? बरट्रेण्ड रसेल ने केण्टर की राशि की परिभाषा लेकर जो तर्क छेड़ा और जिसने केन्टर के पचास वर्षों के प्रयास से बने राशि-सिद्धान्त को मानो क्षणमात्र में धराशायी कर दिया उसे हम एक दृष्टान्त द्वारा बतलाते हैं - 'किसी गाँव में एक नाई रहता है। वह उन सभी की हजामत बनाता है, जो अपनी हजामत स्वयं नहीं बनाते। प्रश्न है कि नाई की हजामत कौन बनाता है?'

इसी तर्क को स्पष्ट करने के लिए हम संकेतों के द्वारा तर्क निर्मित कर सिद्ध करेंगे कि वह स्वबाधित है। केण्टर ने जितने साध्य राशि-सिद्धान्त सम्बन्धी सिद्ध कर बतलाये थे, वे तीन स्वयंसिद्धों (axioms) पर आधारित थे-

1. राशियों हेतु विस्तारात्मक योग्यता का स्वयंसिद्ध - यह निश्चयपूर्वक बतलाता है कि कोई भी दो राशियाँ सर्व-सम होती हैं, यदि उनमें वही सदस्य हों।
2. अमूर्त्त कल्पना का स्वयंसिद्ध (axioms of abstraction) इसका कथन है कि किसी दिये हुए गुणधर्म (Property) के लिए एक ऐसी राशि का अस्तित्व रहता है जिसके सदस्य (members) ठीक वे ही वस्तुएँ (entities) होती हैं, जिनमें वही गुणधर्म होता है।
3. विकल्प संबंधी स्वयंसिद्ध (axiom of choice) -समतुल्य रूप में यह सुक्रमबद्धी साध्य (well-ordering theorem) है, जिसका कथन है कि प्रत्येक राशि-वर्ग इस प्रकार क्रमबद्ध किया जा सकता है, कि उसका प्रत्येक अतिरिक्त उपराशि वर्ग का एक सदस्य प्रथम अवश्य होता है।

इनमें से उलझन उत्पन्न करने वाला स्वयंसिद्ध क्रमांक 2 है। 1901 में बट्रेण्ड रसेल ने पाया कि इस स्वयंसिद्ध द्वारा पूर्वापर विरोध (contradiction) निकाला जा सकता है। वह इस प्रकार कि उन सभी वस्तुओं की राशि पर विचार किया जाये, जिनमें ऐसा गुणधर्म हो कि वे परस्पर में एक-दूसरे के सदस्य न हों। इसकी संदृष्टिमय रचना के लिए हमें राशि-सदस्यता संबंधी संदृष्टि 'ε' जो युग्मक निरूपक है, लेना होता है। इस प्रकार सूत्र '$X \varepsilon Y$' का अर्थ 'X सदस्य है Y का, 'Y में X' है, होता है। इस प्रकार यदि A प्रथम पांच अयुग्म धनात्मक पूर्णाकों की राशि हो, तो वास्य '$7 \varepsilon A$' सत्य होता है और '$6 \varepsilon A$' असत्य होता है। आधुनिक न्याय संबंधी संकेत निम्नलिखित हैं-

संकेत	अर्थ
-P	यह मामला नहीं है P

P & Q	P और Q
PV Q	P और Q
$P \rightarrow Q$	यदि P तो Q
$P \rightarrow Q$	P यदि और केवल यदि Q
$(\forall v)P$	प्रत्येक V के लिये, P
$(\exists v)P$	किसी V के लिये, P
(E!v)P	ठीक एक V होता है ताकि P

इसकी सहायता से यह वाक्य 'प्रत्येक X के लिये एक Y होता है, इसी प्रकार कि X<Y' निम्नलिखित रूप में संदृष्टिमय बनता है–

$(\forall x)\ (\exists y)\ (x < y)$

अब कैण्टर के दूसरे स्वयंसिद्ध का संक्षिप्त सूत्रीकरण यह है –

$(\exists y)\ (\forall y)\ (x \ni y \leftrightarrow \phi)\ (x),$ .... (1)

जहाँ यह समझ है कि $\phi(x)$ एक ऐसा सूत्र है जिसमें चर (Variable) 'Y' स्वतंत्र नहीं है। रसेल के विरोधाभास (Paradox) को बनाने के लिये हम चाहते हैं कि $\phi(x)$ यह कथन करे कि स्वयं का सदस्य नहीं है। इसका यथार्थ सूत्र स्पष्ट रूप से यह है –

$-(x \ni x)$

तब हमें अमूर्त कल्पना के स्वयंसिद्ध का एक उदाहरण इस प्रकार प्राप्त होता है –

$(\exists y)\ (\forall x)\ (x \varepsilon y \leftrightarrow -[x \varepsilon x])$ .... (2)

उपर्युक्त वाक्य (2) में X=Y लेने पर यह अनुमान प्राप्त होता है कि

$y \varepsilon y \leftrightarrow -(y \varepsilon y)$ .... (3)

जो कि पूर्वापर विरोध

$y \varepsilon y \,\&\, -(y \varepsilon y)$ .... (4)

से न्यायरूप तुल्य है।

क्रमशः ....

सम्यक् ध्यान शतक

- मुनि आर्जवसागर

गतांक से आगे ....

रौद्र ध्यान

रुद्र भाव ही रौद्र है, क्रूर उठें परिणाम।
जिसको भी तजना कहूँ, तभी होय शुभ ध्यान।।

हिंसानंद

जहाँ जीव का घात हो, ऐसा कार्य सहर्ष।
करना हिंसानंद है, जीवन ना आदर्श।।

मृषानंद

झूठ वचन जो पाप हैं, उनका जहाँ प्रयोग।
मृषानंद वह ध्यान है, शुद्ध न हो उपयोग।।

चौर्यानन्द

पर पदार्थ का हो हरण, छल कपटी मन होय।
चौर्यानन्दी ध्यान है, दुर्गति में गम जोय।।

परिग्रहानन्द

इच्छाओं का जाल जो, बुने संग का भार।
परिग्रहानंदी बने, नारक दुख्ख मझार।।

रौद्र ध्यान के गुणस्थान

प्रथम पाँच गुणथान तक, सभी रौद्र हों ध्यान।
समकित, अणुव्रत हों जहाँ, तीव्र रौद्र ना जान।।

धर्म ध्यान

आर्त्त, रौद्र को त्याग कर, करें धर्म–मय ध्यान।
राग–द्वेष वा पाप बिन, सामायिक पहिचान।।

❖

सदा धर्म मय भाव हो, आवश्यक में लीन।
धर्म ध्यान तब साथ हो, वही भव्य स्वाधीन।।

क्रमशः ....

महावीराचार्यप्रणीतः
गणितसारसंग्रहः

गतांक से आगे ....

अनुवादक : प्रो. एल.सी. जैन

नेन्दाग्न्यृतुशरचतुस्त्रिद्वन्द्वैकं स्थाप्यैमत्र नवगुणितम् ।
आचार्यमहावीरैः कथितं नरपालकण्ठिकाभरणम् ॥१०॥
षट्त्रिकं पञ्चषट्कं च सप्त चादौ प्रतिष्ठितम् । त्रयस्त्रिंशत्संगुणितं कण्ठाभरणमादिशैत् ॥११॥
हुतवहगतिशशिमुनिभिर्वसुनयगतिचन्द्रमत्र संस्थाप्य ।
शैलेन तु गुणयित्वा कथयेदं रत्नकण्ठिकाभरणम् ॥१२॥
अनलाब्धिहिमगुमुनिशरदुरिताक्षिपयोधिसोममास्थाप्य ।
शैलेन तु गुणयित्वा कथय त्वं राजकण्ठिकाभरणम् ॥१३॥
गिरिगुणद्विविगिरिगुणद्विविगिरिगुणनिकरं तथैव गुणगुणितम् ।
पुनरेवं गुणगुणितम् एकादिनवोत्तरं विद्धि ॥१४॥
सप्त शून्यं द्वयं द्वन्द्वं पञ्चैकं च प्रतिष्ठितम् । त्रयः सप्ततिसंगुण्यं[10] कण्ठाभरणमादिशेत् ॥१५॥
जलनिधिपयोधिशशधरनयनद्रव्याक्षिनिकरमास्थाप्य ।
गुणिते तु चतुःषष्ट्या का संख्या गणितविद्ब्रूहि ॥१६॥
शशाङ्केन्दुखैकेन्दुशून्यैकरूपं निधाय क्रमेणात्र राशिप्रमाणम् ।
हिमांशवम्ररन्ध्रैः प्रसंताडितेऽस्मिन् भवेत्कण्ठिका राजपुत्रस्य योग्या ॥१७॥

इति परिकर्मविधौ प्रथमः प्रत्युत्पन्नः समाप्तः ।

१ श्लोक १० से १५ तक केवल M और B में प्राप्य हैं । २ सभी हस्तलिपियों में 'स्थाप्य तत्र' पाठ है । ३ B शे । ४ B नयं १० सभी हस्तलिपियों में छंद रूपेण अशुद्ध पाठ "कण्ठाभरणं विनिर्दिशेत्" है ।

की रचना करती है ॥१०॥ ३ को छः बार, ६ को पाँच बार, और ७ को एक बार अवरोही क्रम से (इकाई के स्थान की ओर) लिखकर, इस संख्या का ३३ से गुणन करने पर एक प्रकार के हार की संख्या प्राप्त होती है ॥११॥ इस प्रश्न में, ३, ४, १, ७, ८, २, ४ और १ अंकों को इकाई के स्थान से ऊपर की ओर के क्रम में लिखने पर संख्या का ७ से गुणन करो; और तब कहो कि वह रत्न कंठिका नामक आभरण है ॥ १२ ॥ १४२८५७१४३ संख्या को लिखकर उसे ७ से गुणित करो; और तब कहो कि वह राजकण्ठिका आभरण है ॥१३॥ इसी तरह, ३७०३७०३७ को ३ से गुणित करो । इस गुणनफल को फिर गुणित करो ताकि गुणक क्रमशः एक से लेकर ९ तक हों ॥१४॥ ७, ०, २, २, ५ और १ अंकों को (इकाई के स्थान से ऊपर की ओर के क्रम में) रखते हैं । और इस संख्या को ७३ से गुणित करते हैं । प्राप्त संख्या को कण्ठ आभरण कहते हैं ॥१५॥ इकाई के स्थान से ऊपर की ओर अंक ४, ४, १, २, ६ और २ क्रमानुसार लिखकर, प्ररूपित संख्या को ६४ से गुणित करने पर हे गणित विद्ब्रूहि, बतलाओ कि कौन सी संख्या प्राप्त होगी ? ॥१६॥ इस प्रश्न में, इकाई के स्थान से ऊपर की ओर १, १, ०, १, १, ०, १ और १ अंकों को क्रमानुसार रखने से एक विशेष संख्या का मान होता है; और तब इस संख्या में ९१ का गुणा करने पर राजपुत्र के योग्य कण्ठहार प्राप्त होता है ॥१७॥

इस प्रकार, परिकर्म व्यवहार में, प्रत्युत्पन्न नामक परिच्छेद समाप्त हुआ ।

(१०) इसमें तथा अन्य गाथाओं में कुछ संख्याएँ विभिन्न प्रकार के हारों की रचना करती हुई मानी गई हैं; क्योंकि उनमें एक से अंकों का शीघ्र ही दृष्टिगोचर होनेवाला सम्मितीय विन्यास रहता है ।

(११) यहाँ गुण्य ३३३३३३६६६६६७ है ।

(१४) यह प्रश्न, स्वतः, इस रूपमें अवतरित हो जाता है : ३७०३७०३७ × ३ को १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८ और ९ द्वारा क्रमानुसार गुणित करो ।

भागहारः

द्वितीये भागहारकर्मणि करणसूत्रं यथा—

[1]विन्यस्य भाज्यमानं तस्याधःस्थेन भागहारेण । सदृशापवर्तविधिना भागं कृत्वा फलं प्रवदेत् ॥१८॥
अथवा—
प्रतिलोमपथेन भजेद्भाज्यमधःस्थेन भागहारेण । सदृशापवर्तनविधिर्यद्यस्ति विधाय तमपि तयोः॥१९॥

अत्रोद्देशकः

दीनाराष्टसहस्रं द्वानवतियुतं शतेन संयुक्तम् । चतुरुत्तरषष्टिनरैर्भक्तं कोंऽशो नुरेकस्य ॥२०॥
रूपाग्रसप्तविंशतिशतानि कनकानि यत्र भाज्यन्ते । सप्तत्रिंशत्पुरुषैरेकस्यांशं[2] ममाचक्ष्व ॥२१॥
दीनारदशसहस्रं त्रिशतयुतं सप्तवर्गसंमिश्रम् । नवसप्तत्या पुरुषैर्भक्तं[3] किं लब्धमेकस्य ॥२२॥
[4]अयुतं चत्वारिंशच्चतुस्सहस्रैकशतयुतं हेम्नाम्[5] । नवसप्ततिवसतीनां दत्तं वित्तं किमेकस्याः ॥२३॥
[6]सप्तदशत्रिशतयुतान्येकत्रिंशत्सहस्रजम्बूनि । भक्तानि नवत्रिंशन्नरैर्वदैकस्य भागं त्वम् ॥२४॥

---

१ यह श्लोक P में प्राप्य नहीं है । २ K स । ३ M कोंऽशो नुरेकस्य । ४ यह श्लोक P में प्राप्य नहीं है । ५ B और K हेमम् । ६ इस श्लोक में दिये गये प्रश्न का पाठ M में निम्न प्रकार है—

त्रिशतयुतैकत्रिंशत्सहस्रयुक्ता दशाधिकाः सप्त ।
भक्ताश्चत्वारिंशत्पुरुषैरेकोनैस्तत्र दीनारम् ॥

भागहार [भाग]

परिकर्म क्रियाओं में द्वितीय, भागहार क्रिया का नियम निम्नलिखित है—

भाज्य को लिखकर उसे उभयनिष्ठ (साधारण) गुणनखंडों को अलग करने के रीति के अनुसार भाजक द्वारा भाजित करो । भाजक को भाज्य के नीचे रखो और तब, परिणामी भजनफल को प्राप्त करो ॥१८॥ अथवा—यदि सम्भव हो, तो उभयनिष्ठ गुणनखंड को निरसित करने की विधि से, भाज्य के नीचे भाजक को रखकर, भाज्य को प्रतिलोम विधि से अर्थात् बायें से दायें भाजित करना चाहिये ॥१९॥

उदाहरणार्थ प्रश्न

६४ व्यक्तियों में ८१९२ दीनार बाँटि गये हैं। प्रत्येक व्यक्ति के हिस्से में कितने आये हैं? ॥२०॥ मुझे एक व्यक्ति का हिस्सा बतलाओ जब कि २७०१ स्वर्ण के टुकड़े ३७ व्यक्तियों में बाँटि जाते हैं । ॥२१॥ १०३४९ दीनार ७९ व्यक्तियों में बाँटि जाते हैं । बतलाओ एक व्यक्ति को क्या प्राप्त होगा ? ॥२२॥ १४१४१ स्वर्ण के टुकड़े ७९ मंदिरों में दिये जाते हैं । बतलाओ प्रत्येक मंदिर में कितना धन दिया जाता है ? ॥२३॥ ३१३१७ जम्बू फल (गुलाबी सेव) ३९ व्यक्तियों में बाँटे गये हैं । प्रत्येक का अंश (हिस्सा) बतलाओ ? ॥२४॥ ३१३१२ जम्बू फल १८१ व्यक्तियों में बाँटि गये हैं । प्रत्येक का अंश

---

(२०) मूल गाथा में ८१९२ को ८००० + ९२ + १०० द्वारा लिखित किया गया है ।
(२२) मूल गाथा में १०३४९ को १०००० + ३०० + $(७)^{२}$ द्वारा निदर्शित किया गया है ।
(२३) यहाँ १४१४१ को १०००० + (४० + ४००० + १ + १००) द्वारा कथित किया गया है ।
(२४) यहाँ ३१३१७ को १७ + ३०० + ३१००० द्वारा दर्शाया गया है ।

त्र्यधिकदशत्रिशतयुतान्येकत्रिंशत्सहस्रजम्बूनि । सैकाशीतिशतेन प्रहृताति नरैर्वदैकांशम् ॥२५॥
त्रिदशसहस्री सैकाषष्टिद्विशतीसहस्रषट्कयुता । रत्नानां नवपुंसां दत्त्वैकनरोऽत्र किं लभते ॥२६॥
[2]ऐकादिषडन्तानि क्रमेण हीनानि हाटकानि सखे । विधुजलधिबन्धसंख्यैर्नरैर्हृतान्येकभागः कः॥२७॥
त्र्यशीतिमिश्राणि चतुःशतानि चतुस्सहस्राण्यनगान्वितानि ।
रत्नानि दत्तानि जिनालयानां त्रयोदशानां कथयैकभागम् ॥२८॥

इति परिकर्मविधौ द्वितीयो भागहारः समाप्तः ॥

वर्गः

तृतीये वर्गपरिकर्मणि करणसूत्रं यथा—

द्विसमवधो घातो वा स्वेष्टोनयुतद्वयस्य सेष्टकृतिः । एकाद्विचयेच्छागच्छयुतिर्वा भवेद्वर्गः ॥२९॥

---

१ यह श्लोक केवल M में प्राप्य है ।

२ M एकद्वित्रिचतुःपञ्चषट्कैर्हीनाः क्रमेण संभक्ताः ।
सैकचतुःशतसंयुतचत्वारिंशजिनालयानां किम् ॥

बतलाओ ? ॥२५॥ ३६२६१ मणि ९ व्यक्तियों को बराबर-बराबर दिये जाते हैं । एक व्यक्ति कितने मणि प्राप्त करता है ? ॥२६॥ हे मित्र, एक से आरम्भ कर ६ तक के अंकों को इकाई के स्थान से ऊपर की ओर के क्रम में रखकर और फिर क्रमानुसार ह्रासित अंकों द्वारा संरचित संख्या की सुवर्ण-मुद्राएँ ४४१ व्यक्तियों में वितरित की जाती हैं । प्रत्येक को कितनी मिलती हैं ? ॥२७॥ २८४८३ मणि १३ जिन मंदिरों में भेंट स्वरूप दिये जाते हैं । प्रत्येक मंदिर को कितना अंश प्राप्त होता है ? ॥२८॥

इस प्रकार, परिकर्म व्यवहार में, भागहार [भाग] नामक परिच्छेद समाप्त हुआ ।

वर्ग

परिकर्म क्रियाओं में तृतीय [वर्ग करने की क्रिया] के नियम निम्नलिखित हैं—

दो सम राशियों का गुणनफल; अथवा दो सम राशियों में से किसी एक चुनी संख्या को प्रथम राशि में से घटाकर प्राप्त फल तथा दूसरी राशि में उस चुनी हुई संख्या को जोड़ने से प्राप्त फल, इन दोनों फलों के गुणनफल में उस चुनी हुई संख्या का वर्गफल जोड़ने पर प्राप्तफल, अथवा, गुणोत्तर श्रेढि (जिसमें प्रथमपद १ है और प्रचय २ है) का अ पदों तक का योगफल, उस इच्छित राशि का वर्ग होता है ॥२९॥ दो या तीन या इससे अधिक संख्याओं का वर्ग, उन सब संख्याओं के वर्ग के योग

---

(२५) यहाँ ३१३१३ को १३ + ३०० + ३१००० द्वारा दर्शाया गया है ।

(२६) यहाँ ३६२६१ को ३०००० + १ + (६० + २०० + ६०००) द्वारा दर्शाया गया है ।

(२७) यहाँ दिया गया भाज्य, स्पष्ट रूप से, १२३४५६५४३२१ है ।

(२८) यहाँ २८४८३ को ८३ + ४०० + (४००० × ७) द्वारा निरूपित किया गया है ।

(२९) बीजगणित द्वारा बतलाये जाने पर यह नियम इस तरह का रूप लेता है—

(i) $अ \times अ = अ^{२}$ (iii) $(अ + क)(अ - क) + क^{२} = अ^{२}$ (iii) $१ + ३ + ५ + ७ + \ldots$ अ पदों तक $= अ^{२}$

द्विस्थानप्रभृतीनां राशीनां सर्ववर्गसंयोगः । तेषां क्रमघातेन द्विगुणेन विमिश्रितो वर्गः ॥३०॥
कृत्वान्त्यकृतिं हन्याच्छेषपदैर्द्विगुणमन्त्यमुत्सार्य । शेषानुत्सार्यैवं करणीयो विधिरयं वर्गे ॥३१॥

अत्रोद्देशकः

एकादिनवान्तानां पञ्चदशानां द्विसंगुणाष्टानाम् । त्रतयुगयोश्च रसाग्न्योः शरनगयोर्वर्गमाचक्ष्व ॥३२॥
साष्टात्रिंशत्त्रिशती चतुःसहस्रैकषष्टिषट् छतिका । द्विशती षट्पञ्चाशन्मिश्रा वर्गीकृता किं स्यात् ॥३३॥
लेख्यागुणेषुबाणद्रव्याणां शरगतित्रिसूर्याणाम् । गुणरत्नाग्निपुराणां वर्गं भण गणक यदि वेत्सि ॥३४॥

तथा उन संख्याओं को एक बार में दो लेकर उनके दुगुने गुणनफल के योग को मिलाने के बराबर होता है ॥३०॥ दाहिनी ओर से बाईं ओर को अङ्क गिनने के क्रम में संख्या के अन्तिम अङ्क का वर्ग प्राप्त करो, और तब इस अङ्क को द्विगुणित कर तथा एक संकेतना के स्थान तक दाहिनी ओर हटा देने के पश्चात्, इस अन्तिम अङ्क को शेष स्थानों के अङ्कों द्वारा गुणित करो । इस तरह संख्या के शेष अङ्कों में प्रत्येक को एक-एक स्थान तक इसी विधि से हटाते जाओ । यह वर्ग करने की विधि है ॥३१॥

उदाहरणार्थ प्रश्न

१ से लेकर ९ तक तथा १५, १६, २५, ३६ और ७५—इन संख्याओं के वर्ग का मान निकालो ॥३२॥ ३३८, ४६६१ और २५६ का वर्ग करने पर क्या-क्या प्राप्त होगा ? ॥३३॥ हे गणितज्ञ ! यदि तुम जानते हो तो बतलाओ कि ६५५३६, १२३४५ और ३३३३ के वर्ग क्या होंगे ? ॥३४॥

---

(३०) यहाँ स्थान शब्द का स्पष्ट अर्थ संकेतना स्थान होता है । यहाँ एक टीका के निर्वचन के अनुसार वह योग के विघटकों का भी द्योतक है, क्योंकि योग में प्रत्येक ऐसे भाग का स्थान होता है । इन दोनों निर्वचनों के अनुसार नियम ठीक उतरता है ।

जैसे : $(१२३४)^{२} = (१०००^{२} + २००^{२} + ३०^{२} + ४^{२}) + २ \times \overline{१००० \times २००} + २ \times \overline{१००० \times ३०} + २ \times \overline{१००० \times ४} + २ \times \overline{२०० \times ३०} + २ \times \overline{२०० \times ४} + २ \times \overline{३० \times ४}$

इसी तरह, $(१ + २ + ३ + ४)^{२} = (१^{२} + २^{२} + ३^{२} + ४^{२}) + २(१ \times २ + १ \times ३ + १ \times ४ + २ \times ३ + २ \times ४ + ३ \times ४)$

(३१) निम्नलिखित साधित उदाहरणों द्वारा दाहिने ओर हटाने का उल्लिखित नियम स्पष्ट हो जावेगा । यह महावीर की मौलिक विधि है । इन गणनाओं में स्तम्भों का योग इस प्रकार किया जावे कि किसी भी स्तम्भ के दहाई के अंक बांई ओर के स्तम्भ में जोड़े जावें ।

१३१ का वर्ग निकालना

१² =	१				
२×१×३ =		६			
२×१×१ =			२		
३² =			९		
२×३×१ =				६	
१² =					१
	१	७	१	६	१

१३२ का वर्ग करना

१² =	१				
२×१×३ =		६			
२×१×२ =			४		
३² =			९		
२×३×२ =				१२	
२² =					४
	१	७	४	२	४

५५५ का वर्ग करना ।

५² =	२५				
२×५×५ =		५०			
२×५×५ =			५०		
५² =			२५		
२×५×५ =				५०	
५² =					२५
	३०	८	०	२	५

(३३) मूल गाथा में ४६६१ को ४००० + ६१ + ६०० द्वारा निरूपित किया गया है ।

क्रमशः ....

आर्थिक विकास, उदारीकरण एवं वैश्वीकरण का अहिंसात्मक श्रेष्ठ जीवन शैली पर प्रभाव

डॉ. अजित कुमार जैन

गतांक से आगे ....

टी.वी. के एक चैनल द्वारा मई 2011 में प्रसारित कार्यक्रम में दिखलाया गया कि किस प्रकार से बाजार में बिकने वाले तरबूज को खेतों में आक्सीटोसिन नामक हार्मोन के इंजेक्शन लगाकर केवल एक दिन-रात में ही पूरा बड़ा आकार प्राप्त किया जा रहा है। इसे सेक्करीन का इंजेक्शन लगाकर मीठा भी बनाया जा रहा है। इसकी सामान्य व्यक्ति कैसे जाँच कर सकता है? फिलहाल इसकी भौतिक रूप से जाँच करने का आधार तरबूज को बनाने के पश्चात् तरबूज के अंदर देखने पर सफेद बीज दिखते हैं तथा इसके टुकड़े को हाथ से छूने पर सेक्करीन के कारण लिसलिसापन महसूस होता है। आक्सीटोसिन हार्मोन इंजेक्शन को गाय-भैंसों से अधिक दूध प्राप्त करने हेतु लगाया जाता है जिससे आक्सीटोसिन हार्मोन का स्राव दूध में भी पाया जाता है। आक्सीटोसिन हार्मोन इंजेक्शन का उपयोग गाय-भैंसों के जीने की संभावना अर्थात आयु को कम करता जाता है।

फलों-दूध में आक्सीटोसिन हार्मोन व सेक्करीन की जाँच करने का आधार प्रयोगशाला में परीक्षण की संभावना के अलावा अन्य कोई उपाय लेखक की जानकारी में नहीं आया है। सामान्य तौर पर पैसे बचाने अथवा ज्यादा मुनाफा कमाने की प्रवृत्ति के कारण सेक्करीन का उपयोग पैय, जेम्स, मिठाईयाँ, कन्फेक्शनरी, जैलीज, आइसक्रीम आदि पदार्थों के बनाने में किया जाता रहा है। अतः इस प्रकार आक्सीटोसिन हार्मोन व सेक्करीन इंजेक्शन के माध्यम से प्राप्त निर्मित फलों-दूध के सेवन से सावधान रहने, बचने एवं विकल्प खोजने की निताँत आवश्यकता है।

खाद्य पदार्थों के निर्माण में उपयोग किये जाने वाले **हिंसक अथवा मांसाहारी स्रोत वाले मुख्य** Additives एवं इससे संबंधित जानकारी इंटरनेट http:/looking-glass.co.uk/ethical-labelling/index.html पर देखी जा सकती है। अहिंसक होने के नाते हमारा दायित्व व कर्त्तव्य है कि हम इसे जानें, पहिचानें एवं त्यागें। निम्न Additives लाल/भूरे रंग (मांसाहार के निशान) से दर्शाया जाता है जिनका संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है :-

1. खाद्य पदार्थों को लाल रंग का बनाने हेतु Cochineal, Carminic acid, Carmines Natural Red 4-colouring (E-120 इथिकल लेबेलिंग कोड) का उपयोग किया जाता

है। लाल रंग के निर्माण हेतु मादा कीड़े को या तो जीवित उबालकर अथवा सीधे सूर्य की रोशनी में पकाया जाकर उनके पखों को पीसकर बनाया जाता है।

2. Anti-caking agent के लिए Bone phosphate (E-542) का उपयोग किया जाता है।
3. स्वाद/सुगंधी में वृद्धि (Flavour enhancer) के लिए Disodium 5'-ribonucleotides (E-635) एवं Disodium inosinate (E-631) का उपयोग किया जाता है जिसे पशु/मछली से बनाया जाता है।
4. Emulsifier/Gelling Agent के लिए Gelatine का उपयोग किया जाता है जिसे पशुओं की चर्बी एवं हड्डी (made of animal skin and hoofs) से बनाया जाता है। इसे E-441 पशु अंग आधारित खाद्य पदार्थों की श्रेणी (made of animal skin and hoofs) में वर्गीकृत किया जा चुका है। अतः यह मांसाहारी पदार्थों की सूची में नहीं पाया जाता है। इसका उपयोग डेयरी उत्पादों जैसे योगहर्ट्स, कन्फेक्शनरी, जैलीज, आइसक्रीम व अन्य मिठाईयाँ आदि के निर्माण में किया जाता है।
5. Glazing Agent के लिए शेलाक (Shellac) का उपयोग किया जाता है। शेलाक एक प्रकार का रेज़िन है जो lac bug Laccifer lacca Kerr (Coccidaee) नामक कीड़ा रिसाव करता है। यह अस्पष्ट है कि व्यावसायिक उत्पादन हेतु क्या कीड़ों को मारा जाता है अथवा विभिन्न पौधों पर छोड़े गए रिसाव को एकत्रित किया जाता है? यह एक शोध का विषय है!

क्रमशः..........

जैन मूर्ति परम्परा-1

सम्पूर्ण भारत और विदेशों में जैन तीर्थंकरों और जैन देवी-देवताओं की मूर्तियां बहुतायत से प्राप्त होती हैं जो जैन संस्कृति की व्यापकता को सिद्ध करती हैं। एक शिलाखण्ड से निर्मित विश्व की विशालतम मूर्ति श्रवणबेलगोल (कर्नाटक) स्थित भ. गोम्मटेश्वर बाहुबली की है। 26 जनवरी, 2005 को गणतंत्र दिवस की परेड में कर्नाटक सरकार द्वारा आयोजित भ. गोम्मटेश्वर वाली झांकी को प्रथम पुरस्कार मिला था। भ. गोम्मटेश्वर बाहुबली की प्रतिमा के सहस्राब्दी महोत्सव पर भारत सरकार ने 9 फरवरी, 1981 को एक रूपये मूल्य का डाकटिकट जारी किया था।

हंसी-एक मानसिक व्यायाम

डॉ. संजय कुमार जैन

जिंदगी हंसने गाने के लिए है। 5 मिनिट का हँसना आपको पूरे दिन के लिए रिचार्ज करेगा। अलग-अलग शोधों में इस बात की पुष्टि हो चुकी है कि दिन में 15 मिनट की हंसी शरीर के लिए लाजवाब होती है। इससे रक्त प्रवाह बेहतर रहता है। इसके अलावा यह श्वसन प्रणाली मस्तिष्क तथा चेहरे की मांसपेशियों के लिए बेहतरीन व्यायाम है। हंसी बेहतर स्वास्थ्य पाने का शॉर्टकट है।

दरअसल, जब आप खुलकर हंसते हैं, तो आपके शरीर में ऑक्सीजन का प्रवाह बढ़ जाता है और फेफड़े, हृदय आदि शरीर के सभी महत्वपूर्ण अंग अपनी पूरी क्षमता से काम करना शुरू कर देते हैं। जब ऑक्सीजन का सही ढंग से प्रवाह शुरु हो जाता है, तो शरीर वो सारे काम करने लगता है, जिसके लिए बना है। वहीं दूसरी ओर **हंसने से अनेक शारीरिक लाभ हैं** जैसे : शरीर का अपना रोग प्रतिरोधक तंत्र मजबूत होता है, जो बीमारियों से लड़ने में सक्षम है; तनावजनित हार्मोंस को कम करना; दर्द में आराम पहुंचाना; एवं दिल की बीमारियों से छुटकारा दिलाना आदि। **हंसने से मानसिक लाभ भी हैं** जैसे : जीवन में उल्लास व प्रेम बढ़ाना; भावनात्मक रूप से सेहतमंद बनाने में मदद करना आदि।

हंसी के बारे में सुप्रसिद्ध दार्शनिक हेनरी बर्गसन ने एक बार कहा था कि हंसी समाज के नियमों को बनाने में मददगार साबित होती है। हम ऐसे अप्रत्याशित घटनाक्रम पर ही हंसते हैं जो आमतौर पर देखने को नहीं मिलता यही वजह है कि उसकी ओर सबका ध्यान जाता है। प्रख्यात मनोविज्ञानी सिग्मंड फ्रायड का मानना था कि चुटकुले हमें उस मानसिक तनाव से राहत देते हैं जो हमारे भीतर अपनी दैनिक जिम्मेदारियों के चलते पैदा हो जाता है।

हंसी हमारे लिए अनुमान से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण है। हंसी के फायदों का पता लगाने के लिए मैरीलैंड विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने एक शोध किया; उन्होंने 20 स्वयं सेवकों को एक हंसी वाला कार्यक्रम और नाटक दिखाया। दोनों कार्यक्रमों के बाद उनकी रक्त नलिकाओं का परीक्षण किया। शोधकर्ताओं ने पाया कि हास्य कार्यक्रम के बाद जहां स्वयं सेवकों के रक्त प्रवाह में 22 फीसदी का सुधार हुआ वहीं नाटक के बाद इसमें 35 फीसदी की गिरावट देखी गई।

अगर आप सोचते हैं कि सिर्फ मनुष्य को ही भगवान ने हंसी की दौलत बख्शी है तो आप गलत हैं। दुनिया के तमाम पशु-पक्षी किसी न किसी रूप में हंसते हैं। दुनिया के अलग-अलग इलाकों में लोग 50 से अधिक तरीकों से हंसते हैं। एक अच्छी हंसी में चेहरे की कमोबेश 50 से अधिक मांसपेशियां सक्रिय होती हैं और काम में आती है। बेफिक्र हंसी में खुशियों की चाबी छिपी है। एक खुला ठहाका हमारी सेहत के लिए रामबाण है। दुनिया में निश्छल हंसी गंभीर से गंभीर माहौल को हल्का कर देती है। फिल्मों में हमने अनगिनत बार ऐसे दृश्य देखे होंगे कि अपनी धुन में मग्न कोई व्यक्ति कैसे केले के

छिलके पर फिसल पड़ता है या सड़क के बीचों बीच स्थित गड्ढे में गिर जाता है। ये सीन फिल्म में रखे ही मनोरंजन के लिए जाते हैं और ऐसे दृश्य देखकर हम दिल खोलकर हंसते हैं। लेकिन क्या आपने कभी सोचा कि ऐसे मौकों पर हमें खुदबखुद हंसी क्यों आती है? तनाव भरे जीवन से धीरे-धीरे हंसी दूर होती गई और उसकी तलाश में लाफ्टर क्लब बनने लगे। जहां लोग इकट्ठे होकर हंसते और अपनी सेहत बनाते। इसी बीच चीनी फेंगशुई के जरिये देश में आये लॉफिंग बुद्धा ने हंसी को नए सिरे से समाज से जोड़ा। इसके बावजूद हमारे समाज में हंसी पर उस गंभीरता से चर्चा नहीं होती जितनी बाहर के देशों में होती है।

कैंब्रिज विश्वविद्यालय में कुछ दिन बाद चैलेंज डे नामक एक इवेंट का आयोजन किया जा रहा है जहां विभिन्न विद्यालयों के सैकड़ों विद्यार्थी कुछ परिचर्चाओं में ऐसी ही बातों से दो चार होंगे। उन्हें हंसी और उसके महत्व के बारे में बताया जाएगा। ब्रिटेन में ठंड के मौसम में सप्ताह में कई बार चैलेंज डे का आयोजन किया जाता है जहां उन बच्चों को प्रशिक्षण दिया जाता हैं जो कैंब्रिज में दाखिले के बारे में सोच भी नहीं सकते। इस आयोजन से जुड़े कैंब्रिज के विद्वान डॉक्टर लाइंस का कहना है कि वह सैकड़ों साल पुराने चुटकुलों को अपने श्रोताओं पर आजमाकर यह देखना और समझना चाहते हैं कि क्यों कई बार ये चुटकुले कामयाब होते हैं, तो कई बार हंसाने में नाकाम साबित होते हैं।

खुशनुमा जिंदगी के लिए आवश्यक है शारीरिक स्वस्थता, शारीरिक व्यायाम, संतुलित आहार व मानसिक व्यायाम जैसे ध्यान, प्राणायाम, किताबें पढ़ना इत्यादि। वैसे भी जीवन के गमों के कम करने के या खुशी हासिल करने के लिए ईश्वर पर भरोसा आवश्यक है। कभी-कभी तो ऐसा होता है कि हम अपने आप को किसी समस्या के समाधान में सक्षम नहीं पाते, ऐसे में भविष्य की चिंता ईश्वर पर छोड़ वर्तमान को हम चिंतामुक्त कर सकते हैं।

डॉ. लकी चतुर्वेदी साइकोलॉजिस्ट काउंसलर कहती हैं कि जीवन की मधुर स्मृतियों पर धूल न जमनें दें। कभी-कभी बचपन की, कालेज की, कभी धर्म चर्चा की, कभी धार्मिक यात्रा की, मित्रों और जीवनसाथी की मधुर स्मृतियों को वक्त बेवक्त ताजा करते हुये हँसने हँसाने के मौके हाथ से न जाने दें। पल-पल की खुशी को सहेज कर रखें इससे बड़ा आत्मिक सुख मिलता है। जिंदगी में हम जो चाहते हैं हमेशा वैसा होगा यह जरुरी नहीं। कभी-कभी ऐसा भी हो सकता है जिसकी कल्पना हमनें नहीं की। कोई बात नहीं अपने साथ हुये दुर्व्यवहार धोखे, छलावा इत्यादि को विसर्जित करें स्वयं को दृढ़ रखें। थोड़े समय के लिए भावनात्मक दिक्कतें आयेंगी पर आप जैसा खुशनुमा व्यक्तित्व उन परेशानियों से उबर आयेगा यह यकीन रखें। अपनों से गिले-शिकवे करना हमारा हक है पर इस बात का भी ध्यान रखना जरूरी है कि हमारा शिकायत का अंदाज कलात्मक हो जिससे हम अपनी बात कह भी दें और किसी का दिल भी दुःखी न हो। खुश रहने के लिए बदलाव का आना जरूरी है। अपनी रुचियों को बदलें, बार्डरोब को बदलें, व्यक्तित्व के आउटलुक को बदलें। तलाश कीजिए अपने अंदर और आसपास कहां बदलाव या नवीनता लायी जा सकती है।

विश्व शान्ति में युवा शक्ति की भूमिका

गतांक से आगे ....

कु. आराधना जैन

युवा शक्ति सशक्त, संस्कारवान, नैतिक, चारित्रवान और उत्साह से भरी हुई हो तो विश्व प्रगति की ऊँचाईयों को छू सकता है। संकल्पशीलता, संतुष्टि, धैर्यता, अहंकारता का त्याग, संतोषी वृत्ति, उदार दृष्टि, विवेकपूर्ण सोच, बौद्धिक कुशलता जहाँ हो वहाँ दशा और दिशा दोनों ही परिवर्तित हो जाती है। विश्व शान्ति हेतु यह आवश्यक है कि आपस में भाई-चारे की भावना, मेल-मिलाप की भावना, परस्पर हित चिन्तन व दुःख-सुख की भावना, कल्याण की भावना विद्यमान हो। विश्व शान्ति हेतु अपने ही समान दूसरे को समझना और अपने को जो व्यवहार आचरण अच्छा और प्रिय लगता है वही दूसरे के साथ करने का विचार भी प्रभावशाली होगा। इस प्रकार सद्भावना और श्रेष्ठ विचार युवा शक्ति प्राणी-प्राणी के मन में उत्पन्न कर सकें तो विश्व में अशान्ति और अव्यवस्था रह ही नहीं सकती और दुर्भावनाएं समाप्त हो सकती हैं। विश्व शान्ति के लिए महान् दार्शनिकों, चिन्तकों, महात्माओं एवं ऋषि-मुनियों के जीवन सिद्धान्तों और आचरण को अपनाना होगा। उनके बतलाए हुए मार्ग पर चलकर ही विश्व शान्ति का सपना साकार हो सकेगा।

युवा शक्ति ने ही विश्व को अनुपम शौर्य के साथ-साथ प्रेम के अनुपम मार्ग सत्यम-शिवम-सुंदरम जैसी महान् जीवनशैली और नैतिकता की अमूल्य निधि व कला प्रदान की ताकि व्यक्ति, घर-परिवार, समाज, देश, राष्ट्रों और विश्व का वातावरण सुंदरतम बना रहे। समस्त विकासात्मक प्रगतिशील निर्माण कार्य और अविष्कार शान्ति के दिनों में ही सम्पन्न होते हैं, क्योंकि शान्ति के समय ही मनुष्य का मस्तिष्क विषय पर केन्द्रित होता है उसकी ऊर्जा शक्ति पूर्णरूपेण कार्यरत रहती है। शान्ति निर्माण और आविष्कारों हेतु उपयुक्त वातावरण का सृजन करती है। अंग्रेजी के प्रसिद्ध कवि **जान मिल्टन** ने ठीक ही लिखा है - शान्ति की विजय युद्ध में होने वाली विजय से किसी प्रकार कम महत्वपूर्ण नहीं होती है।

वास्तव में शान्ति होने पर संघर्ष का वातावरण उसी प्रकार प्रवेश नहीं कर पाता जिस प्रकार बिना बुलाया हुआ अथवा अनिश्चित अतिथि आपके घर में प्रवेश नहीं कर सकता। युवाओं में आज शक्ति बहुत है ऊर्जा की कमी नहीं है बस उसे दिशा देने की आवश्यकता है उन्हें सद्मार्ग दर्शन की दिशा चाहिए ताकि आत्म विश्वास के साथ अपनी भूमिकाओं के प्रति सजग हों। बदलते हुए परिवेश में अपने बोध को तथा होश को युवावर्ग जगाकर नये युग का सूत्रपात करें। तभी इनमें से कोई महावीर, बुद्ध, विवेकानन्द, गांधी बनकर राष्ट्र को नई दिशा और चेतना प्रदान करेगा। युवाओं में छिपी हुई वह ऊर्जा सार्थक भूमिकाओं के लिए जगे और विश्व में शान्ति का लोक फैले। आज समस्त राष्ट्र विश्व शान्ति और सहयोग की स्थायी स्थापना हेतु एक विश्व भाषा तथा मुद्रा की कल्पना कर रहे हैं जिससे समस्त विश्व के राष्ट्र एक परिवार सदृश्य रह सकें। संयुक्त राष्ट्र संघ इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठा रहा है। पंचशील के सिद्धान्त शान्तिदूत बने हैं तो गुटनिरपेक्ष आन्दोलन सबसे बड़ा शान्ति आन्दोलन। पारस्परिक सहयोग विश्व शान्ति का आधार है। सम्पूर्ण विश्व एक बंधुत्व के सूत्र में बंधे और प्रत्येक व्यक्ति संकीर्ण मान्यताओं से ऊपर उठकर सम्पूर्ण मानव जाति के प्रति सद्भाव रखें तब ही विश्व शान्ति स्थापित हो सकती है।

जैन तीर्थंकर और उनके लांछन

डॉ. श्रीमती अल्पना जैन, ग्वालियर

गतांक से आगे ....

क्रम	तीर्थंकर का नाम	दिगम्बर परम्परा में लांछन	श्वेताम्बर परम्परा में लांछन
1.	ऋषभनाथ	बृषभ (बैल)	बृषभ
2.	अजितनाथ	गज (हाथी)	गज (हाथी)
3.	संभवनाथ	अश्व (घोड़ा)	अश्व (घोड़ा)
4.	अभिनन्दननाथ	वानर (बन्दर)	वानर
5.	सुमतिनाथ	चकवा (चक्रवाक)	क्रौंच पक्षी
6.	पदमप्रभनाथ	लाल कमल पुष्प	कमल पुष्प
7.	सुपार्श्वनाथ	नन्द्यावर्त, स्वस्तिक	स्वस्तिक
8.	चन्द्रप्रभनाथ	अर्धचन्द्र, शशि	अर्धचन्द्र (शशि)
9.	सुविधिनाथ अथवा पुष्पदंत	मगर	मगर
10.	शीतलनाथ	स्वस्तिक, कल्पवृक्ष, श्रीवृक्ष	श्री वत्स
11.	श्रेयांसनाथ	गैंडा	गैंडा
12.	वासुपूज्यनाथ	महिष (भैंसा)	भैंसा
13.	विमलनाथ	वराह, शूकर	वराह, शूकर
14.	अनन्तनाथ	सेही, रीछ	श्येन पक्षी, बाज
15.	धर्मनाथ	वज्र	वज्र
16.	शांतिनाथ	हिरण (मृग)	हिरण
17.	कुन्थुनाथ	छाग (बकरा)	बकरा
18.	अरनाथ या अरहनाथ	तगर कुसुम, मत्स्य, मीन	नन्द्यावर्त
19.	मल्लिनाथ	कलश (कुम्भ)	कलश
20.	मुनिसुव्रतनाथ	कच्छप (कछुवा)	कच्छप (कछुआ)
21.	नमिनाथ	नीलोत्पल (नीलकमल)	नीलकमल
22.	नेमिनाथ	शंख	शंख
23.	पार्श्वनाथ	सर्प (नाग)	सर्प
24.	महावीर स्वामी	सिंह	सिंह

तालिका से स्पष्ट होता है कि दिगम्बर परम्परा एवं श्वेताम्बर परम्परा में मान्य तीर्थंकरों के चिन्हों/लांछनों में कुछ तीर्थंकरों के लांछनों के संबंध में भिन्नता पायी जाती है।

पांचवे तीर्थंकर सुमतिनाथ का लांछन दिगम्बर परम्परानुसार चकवा (कोक) है जबकि श्वेताम्बर परम्परानुसार क्रौंच पक्षी है। सातवें तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ का चिन्ह नन्द्यावर्त (तिलोयपण्णति), स्वस्तिक (अनगार धर्मामृत) है, जबकि श्वेताम्बर परम्परा में स्वस्तिक हैं। दसवें तीर्थंकर शीतलनाथ का दिगम्बरों के अनुसार स्वस्तिक (तिलोयपण्णति), कल्पवृक्ष (जैन तत्वविद्या, तीर्थंकर ज्ञातव्य), श्रीद्रुम (प्रतिष्ठा सारोद्धार), श्रीवृक्ष (अनगार धर्मामृत) है तथा श्वेताम्बरों के अनुसार श्रीवत्स है। चौदहवें तीर्थंकर अनन्तनाथ का लांछन सेही, रीछ दिगम्बर परम्परानुसार है और श्वेताम्बर परम्परानुसार लांछन श्येन या बाज पक्षी माना गया है। इसी प्रकार अठारहवें तीर्थंकर अरनाथ का लांछन दिगम्बर परम्परा में तगर कुसुम जिसका अर्थ मत्स्य किया है मान्य है जबकि श्वेताम्बर परम्परा में नन्द्यावर्त मान्य है। शेष अन्य तीर्थंकरों के लांछनों के संबंध में दोनों परम्पराओं से समानता पायी जाती है।

जैन धर्म में आगम साहित्य और स्त्रोत साहित्य में तीर्थंकर का महत्त्व प्रतिपादित किया गया है। चतुर्विंशतिस्तव और शक्रस्तव में उनके गुणों का उत्कीर्तन किया गया है। तीर्थंकर देवाधिदेव हैं। जैन प्रतिमाओं में इन्हें प्रमुख स्थान दिया गया और ऐसे लक्षण उपस्थित किये जो तुलनात्मक ढंग से तीर्थंकर के प्रमुख लक्षणों व गुणों को व्यक्त करते हैं। [17] चौबीस तीर्थंकरों की प्रतिमाओं में समान रूप से दिगम्बरत्व तथा वीतराग वृत्ति के दर्शन होते हैं। श्रेष्ठ सौन्दर्य पूर्ण होने से उनकी समानता दृष्टिगोचर होती है। श्रेष्ठ सौन्दर्य पूर्ण होने से उनकी समानता दृष्टिगोचर होती है। यदि उन पर अभिलेख या चिन्ह नहीं है तो उन्हें पहचानने में कठिनाई होती है। सामुद्रिक शास्त्र के आधार पर प्रत्येक तीर्थंकर का जो एक-एक चिन्ह होता है उससे उनकी मूर्तियाँ पहचानी जाती है। [18] चौबीस तीर्थंकरों की प्रतिमाओं की पहचान उनके आसनों के ऊपर या नीचे अंकित चिन्ह/लांछनों से होती है, जिससे उन्हें पहचानने में सुविधा रहती है। तीर्थंकर मूर्ति-विज्ञान में चिन्ह या लांछन का अपना विशेष महत्व है। मध्य युग से सभी तीर्थंकर प्रतिमाओं का लक्षण, चिन्ह अंकित होने लगे। [19]

जैन तीर्थंकर प्रतिमाओं पर लांछनों के अंकन संबंधी पुरातात्विक साक्ष्य उपलब्ध है। यद्यपि प्रारम्भिक तीर्थंकर प्रतिमाएँ एक जैसी थीं। मूर्ति निर्माण के प्रारम्भिक काल में प्रतिमाओं पर लांछन उत्कीर्ण करने की परम्परा नहीं रही। उस समय प्रतिमाओं की पहचान उन पर उत्कीर्ण अभिलेखों द्वारा होती थी। लोहानीपुर (पटना) से प्राप्त मौर्यकालीन तथा मथुरा से प्राप्त कुषाण कालीन मूर्तियों में लांछन उत्कीर्ण नहीं किये गये। इसके पश्चात काल में लांछनों के अंकन की परम्परा प्रारम्भ हुई और इनका अंकन मूर्ति के पाद-पीठ पर किया जाने लगा। [20] प्रारम्भ में लेखों के उत्कीर्ण के अतिरिक्त कुछ तीर्थंकर प्रतिमाएं अपने विशिष्ट लक्षणों से भी पहचानी जाती थीं। ऋषभदेव की प्रतिमाओं के सिर पर जटायें या कंधों पर लहराते केश गुच्छ निर्मित किये जाते थे, जो कि उनके साधनामयी जीवन की घटना को स्पष्ट करते हैं छः मास की अखण्ड समाधि (ध्यान) धारण करने से ऋषभनाथ को केशलोंच करने का अवसर

नहीं मिला इसलिए उनकी जटायें प्रतिमाओं के अंकन में बतलायी गयी हैं। तीर्थंकर पार्श्वनाथ की मूर्तियों के ऊपर सर्पफण का अंकन उनके ऊपर आये उपसर्ग का घोतक है। कमठकृत उपसर्ग निवारण हेतु धरणेन्द्र ने अपना फण पार्श्वनाथ पर फैला लिये थे। सुपार्श्वनाथ तीर्थंकर की कुछ मूर्तियों के सिर के ऊपर भी सर्पफण अंकन मिलते हैं। सुपार्श्वनाथ के विषय में कहा जाता है कि सुपार्श्वनथ भगवान जब अपनी माता के गर्भ में आये थे, तब उनकी माता पृथ्वी ने अपनी आत्मा को एक, पाँच, और नौ फण वाले नाग के ऊपर सोया हुआ देखा था। इस कथानक के फलस्वरूप प्रतिमा के ऊपर सर्प बनने लगे। पार्श्वनाथ और सुपार्श्वनाथ के सर्पफणों में साधारण सा अन्तर मिलता है। सुपार्श्वनाथ की प्रतिमाओं के ऊपर पाँच, एक, नौ फण वाले पाये जाते हैं और पार्श्वनाथ की प्रतिमाओं के ऊपर सात, नौ, एक सौ आठ, ग्यारह अथवा सहस्र सर्पफण पाये जाते हैं।[21]

भारतीय पुरातत्त्वज्ञ राय बहादुर चन्दा का वक्तव्य है कि सिन्धु घाटी की सील मुहरों में उकेरी हुई कृर्तियों के अध्ययन क्रम में सील नं. द्वितीय एफ.जी.एच. में जो मूर्ति उत्कीर्ण हैं उसमें वैराग्य मुद्रा तो स्पष्ट है ही, पर उसके नीचे के भाग में ऋषभदेव के चिन्ह बैल का सद्भाव भी है।[22] डॉ. ज्योतिप्रसाद जैन 'भारतीय इतिहास एक दृष्टि' में उल्लेख करते हैं कि - सिन्धु घाटी सभ्यता में प्राप्त अवशेषों के आधार पर ऐसा प्रतीत होता है कि उसके पुरस्कर्ता प्राचीन विद्याधर जाति के लोग थे तथा उनके धार्मिक मार्गदर्शक मध्यप्रदेश के वे मानववंशी मूल आर्य थे जो श्रमण संस्कृति के उपासक थे। सम्भवनाथ तीर्थंकरका विशेष चिन्ह अश्व है और सिन्धु देश चिरकाल तक अपने सैन्धव अश्वों के लिए प्रसिद्ध रहा है। मौर्यकाल तक सिन्ध में एक सम्भूतक जनपद और सांभव (सबूज) जाति के लोग विद्यमान थे जो बहुत संभव है सम्भवनाथ तीर्थंकर की परम्परा से संबंधित रहे हों। इसी प्रकार सिन्धु सभ्यता में नागफण के छत्र से युक्त कलाकृतियाँ भी प्राप्त हुई हैं,जो सातवें तीर्थंकर सुपार्श्व की हो सकती हैं। इनका चिन्ह स्वास्तिक है और तत्कालीन सिन्धु घाटी में स्वास्तिक एक अत्यंत लोकप्रिय चिन्ह रहा है।[23]

पुरातात्विक दृष्टि से जिन तीर्थंकर प्रतिमाओं की चरण चौकी पर लांछनों के अंकन के प्रमाण प्राप्त हुए हैं। लांछन युक्त प्राचीनतम तीर्थंकर मूर्तियाँ गुप्तकाल की हैं, ये हैं - राजगिर (बिहार) से प्राप्त तीर्थंकर नेमिनाथ की एक अंशतः खण्डित मूर्ति उल्लेखनीय है जिस पर शंख का लांछन अंकित है और चन्द्रगुप्त के उल्लेख सहित एक गुप्त कालीन अभिलेख भी उस पर उत्कीर्ण है। इसको सर्वप्रथम रामप्रसाद चंदा द्वारा प्रकाशित किया गया।[24] भगवान महावीर की मूर्ति भारतकला भवन, वाराणसी में सुरक्षित है तथा राज्य संग्रहालय भरतपुर में भी तीर्थंकर नेमिनाथ की ध्यान मुद्रा में उत्कीर्ण एक गुप्त कालीन प्रतिमा विद्यमान है जिसकी चरण चौकी पर उनका लांछन शंख अंकित है।[25] इससे ज्ञात होता है कि गुप्तकाल में तीर्थंकर लांछनों के अंकन की परम्परा थी पर व्यापक रूप में अंकन का कार्य जिन मूर्तियों पर नहीं होता था। गुप्तकाल में केवल चार जिनों (तीर्थंकर) ऋषभनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ और महावीर के ही लांछन अंकन निश्चित रूप में प्राप्त हुए।[26]

क्रमश : ....

सत्यमेव जयते

राष्ट्रपति
भारत गणतंत्र
PRESIDENT
REPUBLIC OF INDIA

संदेश

यह जानकर बहुत प्रसन्नता हो रही है कि श्री मज्जिनेन्द्र जिनबिम्ब-मानस्तम्भ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव समिति, दांता द्वारा मान स्तम्भ में विराजित होने वाली जिन बिम्बों का पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव योगी मुनि श्री 108 आर्जवसागरजी महाराज एवं क्षुल्लक 105 श्री हर्षितसागरजी महाराज के सान्निध्य में दिनांक 20 फरवरी, 2011 से 27 फरवरी, 2011 के दौरान किया जा रहा है।

इस महोत्सव के सफल आयोजन के लिए मेरी ओर से बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

(प्रतिभा देवीसिंह पाटील)

नई दिल्ली
दिनांक : 08 फरवरी, 2011

पुस्तक समीक्षा

जैन गणित-जटिलता से सरलता की ओर

-श्रीपाल जैन 'दिवा'

जैन गणित की जटिलता को सरलता में बदलने का प्रस्तुत करने का साहस व प्रयास ब्र. पुष्पा दीदी ने **'जैन गणित (लौकिक एवं लाकोत्तर)'** पुस्तक के माध्यम से किया है। वह भी **प.पू. आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज एवं संघस्थ साधुओं के शुभाशीष एवं जैन गणितज्ञ परम आदरणीय प्रो. लक्ष्मीचंद्र जैन,** जबलपुर की सतत प्रेरणा के साथ उनकी यह कृति एवं प्रयास अत्यंत सराहनीय है। वे साधुवाद की पात्रा तो हैं ही साथ ही जैन गणित की जटिलता के भय को दूर करने का शुभ भाव एवं सद्प्रयास की प्रथम पुण्यार्जिका भी बन गई हैं। पुस्तक की रचना विद्यार्थियों के लिए की गई है। प्रत्येक अध्याय के अंत में प्रश्न माला दी गई हैजो पाठक या विद्यार्थी के ज्ञान की परीक्षा भी लेती है। इसे जैन गणित की प्रथम पाठ्य पुस्तक भी कहा जा सकता है। प्रो. लक्ष्मीचंद्र जैन की उत्कृष्ट भावना है कि ''घर-घर में जैन गणित हो हर एक शिविर में जैन गणित हो, हर एक संघ में जैन गणित हो।'' उनकी इस भावना का समादर करते हुए उसे कार्यान्वित किया जाना चाहिए। आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की तो प्रबल इच्छा सदैव से है। उसी का बल प्राप्त कर ब्र. पुष्पा दीदी ने इस पुस्तक की रचना कर डाली है। श्री 105 मृदुमति माताजी की सुप्रेरणा का बल भी कारण सिद्ध हुआ है। वर्तमान भौतिक उन्नति लौकिक गणित पर ही आधारित है पर दर्शन, ज्ञान, चारित्र, कर्म सिद्धान्त एवं मोक्ष तो लोकोत्तर गणित की ही खोज हैं। जिससे जैन समाज अभी बहुत दूर है। उसे जैन गणित के निकट आना पड़ेगा तब ही हमारे दर्शन की महत्ता का ज्ञान हो सकेगा। 'जैन गणित (लौकिक एवं लोकोत्तर)' की सृजेता ने शुभ शुरूआत कर जैन गणित के स्वाध्याय करने का अध्याय खोला है इस शुरूआत को आगे बढ़ाने का प्रयास सतत करती रहेंगी। 'जैन गणित' सुन्दर रंग रूप लेकर गहरे ज्ञान के साथ प्रस्तुत हुआ है। पुस्तक ठिठौनों के साथ पठनीय व पाठ्यक्रम में रखने योग्य है। पुस्तक की जितनी प्रशंसा की जाये कम है।

पुस्तक का नाम	:	**जैन गणित (लौकिक एवं लोकोत्तर)**
लेखक	:	**ब्र. पुष्पा दीदी**
संस्करण	:	प्रथम 2011
प्रतियाँ	:	1100
मूल्य	:	रू. 45.00 (पुनः प्रकाशन हेतु सुरक्षित)
प्रकाशक, प्राप्ति स्थान	:	भगवान ऋषभ देव ग्रन्थ माला, श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, मंदिर संघीजी, साँगानेर (जयपुर) राजस्थान फोन : 0141-2730390 फैक्स : 0141-2731952
प्रेरक प्रसंग	:	श्री 1008 शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर आनन्दपुरी, कानपुर (उ.प्र.) के पंचकल्याण महोत्सव के शुभअवसर पर प्रकाशित।

अहिंसा प्रेमी स्वयं जानें, पहचानें एवं त्यागें.....!

शाकाहारी पदार्थ दर्शक हरे निशान की विश्वसनीयता संदेह के घेरे में आने के पश्चात् केन्द्रीय सूचना अधिकार कानून के तहत वस्तु स्थिति तक पहुँचने का प्रयास निरंतर जारी है। दरअसल कानून की व्यवस्थाएं, नीयत एवं क्रियान्वयन सब कुछ भ्रमित एवं व्यधित करने वाली ही है। भ्रष्ट व्यवस्था का बोलबाला, कर्मठ शासकों का अभाव तथा जनमानस की 'सब चलता है' प्रवृत्ति के इन कारणों से गति चाहे धीमी हो किन्तु हमें विश्वास है कि मांसाहार का पिछले द्वार से शाकाहारियों/जैनियों के घर में प्रवेश अवश्य रुकेगा।

Additives अर्थात् अंतर घटक। पदार्थ चाहे शाकाहारी घटकों से बना हो, उसे अपेक्षित स्वाद, स्वरूप, गुणधर्म टिकाऊपन आदि प्रदान करने के लिए जो सैकड़ों प्रकार के Additives हैं, उनमें अनेकों का स्रोत मांसाहारी है। यूरोपियन कानूनों के तहत अंतर घटकों की पहचान हेतु नम्बर प्रदान किए गए हैं जिसे ई (E) के आगे लिखा जाता है। इस पद्धति को E-Numbering System (ENS) कहा जाता है। E-Number को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया गया है।

100	Colouring Agents
200	Conservation Agents
300	Anti-oxidants
400	Emulsifiers, Stabilizers and Thickener
500	Anti-Coagulants
600	Taste Enhansers
900	Modified Starches

यूरोपियन कानून के बाद 'ग्लोबलायजेशन' के चलते भारत में भी ENS प्रणाली लागू की गई जो शाकाहार प्रेमियों के लिए लाभदायक साबित हो रही है। ऐसे अनेक Additives हैं जिनका स्रोत प्राणीजन्य एवं वनस्पतिजन्य दोनों का हो सकता है। कुछ ऐसे भी Additives हैं जो सिर्फ प्राणीजन्य हैं। रासायनिक तथा वनस्पति पर प्रक्रिया करके प्राप्त करना अधिक कठिन एवं खर्चीला होता है। जबकि अंडा, मांस, प्राणियों के शव/अवयवों से उसी Additives की प्राप्ति सहज और सस्ती होती है। कम लागत और अधिक मुनाफे के चक्कर में अधिकतर उत्पादक प्राणीजन्य स्रोत का विकल्प चुन लेते हैं, जो प्रचुर मात्रा में प्राप्त करना उनके लिए कठिन नहीं होता। उत्पादन प्रक्रिया के दौरान बहुत सारी रासायनिक प्रक्रियाओं से गुजरे होने के कारण उत्पादकों के प्रयोगशाला जाँच में Additives का नाम तो खोजा जा सकता है किन्तु उनका स्रोत खोज पाना अधिकतर Food Laboratory की क्षमता से बाहर है। यहाँ पर गंभीर विसंगति यह है कि उन्हीं प्रयोगशालाओं के दम पर राज्य सरकारें इन उत्पादकों पर कानून के प्रावधानों के उल्लंघन की कार्यवाई करती हैं। भ्रष्ट व्यवस्था की मिलीभगत से लालची उत्पादक धड़ल्ले से मांसाहारी अंतरघटकों का प्रयोग कर शाकाहारी ग्राहकों को लुभाने के लिए हरा निशान

लगाकर करोड़ों भोले लोगों की भावनाओं से खिलवाड़ करते हैं। बेबस कानून में यह ताकत नहीं कि वह उन्हें रोक सके। संदेह होता है कि संभवतः यही कारण है कि सरकार भी जानबूझकर प्रयोगशालाओं को परिपूर्ण नहीं बना रही है।

सूचना के अधिकार के तहत नये सिरे से केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय तथा हैदराबाद व मैसूर की प्रयोगशालाओं में विस्तृत खोजबीन से युक्त आधार देकर जानकारी मांगी गई है। यह सारी प्रक्रिया बहुत समय लेने वाली है। अतः जब तक हम हमारे लक्ष्य तक नहीं पहुँचे तब तक शाकाहार प्रेमियों की सुविधा के लिए E-Numbers दे रहे हैं। उत्पादों पर अत्यंत छोटे अक्षरों में लिखा जाँच पड़ताल कर ही प्रयोग रोकने का उपभोक्ता स्वयं निर्णय करें।

Animal Derived (प्राणीजन्य स्रोत)

E-120, E-422, E-471, E-485, E-488, E-542, E-631, E-904, E-910, E-920, E-921

Possibly Animal Derived (संभवतः प्राणीजन्य स्रोत)

E-252, E-270, E-322, E-325, E-326, E-327, E-430, E-431, E-432, E-433, E-434, E-435, E-436, E-470a-b, E-472a-b, E-473, E-474, E-475, E-476, E-477, E-478, E-479a, E-480, E-481, E-482, E-483, E-491, E-492, E-493, E-494, E-495, E-570, E-572, E-585, E-626, E-627, E-628, E-629, E-630, E-632, E-633, E-634, E-635, E-640

जिन हरे निशान वाले पैकिट खाद्य उत्पादकों पर उपरोक्त में से कोई भी E-Number है तो उसे फिलहाल मांसाहारी श्रेणी में रखकर तत्काल प्रयोग रोकने का अनुरोध है। इसके अलावा निम्न E-Number ऐसे हैं जो प्राणीजन्य तो नहीं किन्तु बच्चों के स्वास्थ्यके लिए विशेष हानिकारक हैं। स्वास्थ्य दृष्टि से त्याग करना बेहतर है।

Specifically Harmful of Children विशेष रूप से बच्चों के लिए हानिकारक

E-102, E-104, E-107, E-110, E-120, E-122, E-123, E-124, E-128, E-131, E-132, E-133, E-151, E-154, E-155, E-160b, E-162, E-210, E-211, E-212, E-213, E- 214, E-215, E-216, E-217, E-218, E-219, E-250, E-251, E-296

अंत में निवेदन यही है कि हमारा जैनत्व सुरक्षित रखने हेतु इस अभियान में सक्रियता से सहभागी बने। मांसाहारी पदार्थ किसी भी रूप में हमारे घर में प्रवेश न कर पाये। इस संकल्प के साथ इस अभियान को बल प्रदान करें।

दिगम्बर जैन/श्वेताम्बर जैन मंदिर, स्थानक आदि सार्वजनिक स्थानों पर इस जानकारी की प्रतियां लगाकर, अखबार/पत्रिकाओं में प्रकाशित कर घर-घर प्रत्येक सदस्य तक अभियान का संदेश पहुँचाने का विनम्र अनुरोध है।

साभार : हम कितने शाकाहारी???

जिनेन्द्र भक्त मंडल, डालटनगंज, बिहार

पशु बलि प्रथा पर रोक

मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय, जबलपुर का आदेश

ग्राम गम्भीरपुरा, पुलिस थाना क्षेत्र निम्बोल्ला, तहसील नेपानगर, जिला-बुरहानपुर, मध्यप्रदेश में शिवा बाबा (शिव बाबा) का मंदिर स्थित है। वहाँ पर प्रति वर्ष माघ सुदी एकम से पूर्णिमा तक 15 दिवसीय वार्षिक मेला भरता है, जहाँ पर बहुत बड़ी संख्या में बकरों/मेढ़ों की बलि चढ़ाई जाती है। दैनिक भास्कर समाचार पत्र में प्रकाशित विवरण के अनुसार फरवरी 2002 के मेले में बकरों/मेंढ़ों की बलि की संख्या 35 हजार बताई गई थी। शिवा बाबा आदिवासी या बंजारा समाज के आराध्य देवता है। आधुनिक प्रचार-प्रसार के कारण से मेले में पहुँचने वाले यात्रियों तथा पशुओं की बलि की संख्या भी निरन्तर बढ़ती चली गई। इस हेतु से नासमझ आदिवासियों का आवागमन भी अत्यधिक बढ़ गया।

शिवा बाबा को बलि देने के पश्चात् बकरों/मेंढ़ों की एक टाँग तथा सिर बलि के स्थान पर छोड़ दिया जाता है तथा वहाँ पर पशुओं के खून का सैलाब बहता हुआ देखा जा सकता है। बलि के पश्चात पशु के शेष भाग, जिनसे खून टपकता जाता है, को उठाकर वहीं आस-पास के जंगल से अवैध रूप से काट कर लाई गई लकड़ी से पकाया जाता है। इससे पूर्व में सार्वजनिक स्थान पर ही बकरे आदि की खाल खींच कर अलग ही निकाल दी जाती है। फिर मांस अलग निकाला जाता है। पशुओं का खून, हड्डियों, खाल आदि चारों तरफ प्रदूषण फैलाते हैं। मेले में उपस्थित भीड़, बच्चे, स्त्रियाँ, पुरुष, सभी बलि के दृश्य को देखने धक्का-मुक्की करते देखे जाते हैं।

वस्तुतः धर्म के कार्यों में हिंसा के लिए कोई स्थान नहीं होना चाहिए। पुत्र-प्राप्ति, धन-प्राप्ति या किसी सिद्धि के लिए भी अज्ञानतावश पशुओं की बलि देवी-देवताओं को चढ़ाई जाने रूप कुप्रथा कहीं-कहीं आज भी जारी है। **प्राणी रक्षा संघ, बुरहानपुर के महासचिव श्री भागचन्द पहाड़िया** (मे. विशाल कॉटन मिल्स, चौक, मालीवाड़ा, बुरहानपुर-450331, मध्यप्रदेश फोन-07325-258208 (का.) 254436 (नि.), मो. 094250-85640) के द्वारा प्रदत्त जानकारी के अनुसार उन्होंने उक्त स्थान पर पशु बलि की कुप्रथा को बन्द कराने हेतु पुरजोर प्रयास किया। एतदर्थ आपने मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय, जबलपुर में रिट पिटीशन क्र. 1156/2002, दिनांक 25 फरवरी 2002 को लगाई थी। उसमें मध्यप्रदेश शासन के मुख्य सचिव, जिला कलेक्टर, जिला पुलिस अधीक्षक, जिला आबकारी अधिकारी, वन विभाग के विभागीय अधिकारी, पुलिस थाना निम्बोल्ला (गम्भीरपुरा) के थाना प्रभारी आदि के विरुद्ध प्रकरण दर्ज करवाया गया। 60 पृष्ठीय इस जनहित याचिका में संस्था की ओर से शपथ-पत्र एवं विभिन्न दस्तावेजों को याचिका के साथ प्रस्तुत किया गया था। अतिशीघ्र आवश्यक सुनवाई (अर्जेण्ट हियरिंग) के निवेदन को स्वीकार करते हुए दिनांक 8 मार्च 2002 को मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय, जबलपुर के द्वारा स्टे ऑर्डर आई.ए. 767/2002 के आदेशानुसार 'पशु क्रूरता निवारण अधिनियम 1960' के अंतर्गत आगे की सुनवाई/कार्यवाही होने तक पशुओं की बलि रोकने हेतु स्टे आर्डर जारी कर दिया गया था।

इस प्रकरण में शिवा बाबा बंजारा समाज समिति न्यास, गम्भीरपुरा के अध्यक्ष एवं ग्राम कोल्या बर्डा, तहसील जोबट, जिला झाबुआ के सरपंच ने भी हस्तक्षेप कर उनके पक्ष की पैरवी करने के लिए अधिवक्ता

नियुक्त किये थे।

मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय, जबलपुर में ''प्राणी रक्षा संघ बनाम मध्यप्रदेश राज्य एवं अन्य'' संबंधी रिट पिटीशन नं. 1156/2002 में प्रकरण पर सुनवाई के दौरान विस्तृत विवेचन की गई। फिर माननीय श्री एस.आर. आलम, मुख्य न्यायमूर्ति एवं श्री आलोक अराधे की खण्डपीठ ने दिनांक 14.10.2010 को याचिका प्रस्तुतकर्ता प्राणी रक्षा संघ, बुरहानपुर के महासचिव श्री भागचन्द जी पहाड़िया, बुरहानपुर की प्रस्तुत जनहित याचिका को स्वीकार कर लिया। इसी के साथ शिवा बाबा मंदिर परिसर तथा उसके आस-पास में भी पशुओं की बलि करने पर रोक लगा दी, गैर कानूनी ढंग से वहाँ के जंगल के पेड़ों की कटाई पर रोक लगा दी तथा वहाँ पर शराब बनाना, बेचना व ग्रहण करने पर भी रोक लगाने विषयक निर्णय पारित कर दिया।

माननीय मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय के 9 पृष्ठीय एवं 17 पैराग्राफ्स वाले इस आदेश के आधार पर बुरहानपुर की कलेक्टर श्रीमती रेणु पन्त ने सरपंच, सचिव व शिवा बाबा मेला समिति के अध्यक्ष सहित संबंधित अधिकारियों को निर्देश देते हुए आदेश जारी किए हैं कि समिति के पदाधिकारी एवं संबधित अधिकारी भी बलि रोकने, मंदिर के आस-पास के पेड़ों की कटाई को रोकने के साथ-साथ शराब की अवैध बिक्री पर भी अंकुश लगाएँ।

याचिकाकर्ता श्री पहाड़िया के जागरुक एवं सतत प्रयास से अहिंसा की एक बार पुनः विजय हुई है। एतदर्थ वे निश्चित रूप से अनेकशः बधाइयों के पात्र हैं। इसीकारण से सकल दिगम्बर जैन समाज, बुरहानपुर के अध्यक्ष श्री महावीर प्रसाद राँवका, आचार्य विद्यासागर शिक्षा निकेतन संस्था के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र जैन, कर सलाहकार श्री एस.सी. जैन, श्री श्वेताम्बर जैन समाज के अध्यक्ष श्री जयराम जैन, आदर्श सेवा समिति के श्री रामप्रताप मित्तल, दिगम्बर जैन समाज, खण्डवा के श्री दिलीप पहाड़िया आदि ने भी श्री भागचन्द पहाड़िया के इस कार्य के प्रति बधाईयाँ प्रेषित की हैं।

अहिंसा की धर्मध्वजा फहराने वाले इस प्रयास के प्रति आप से भी अपेक्षा है कि आप श्री भागचन्द जी पहाड़िया के उपरिलिखित पते पर या फोन पर अवश्य ही शुभकामनाएँ प्रेषित करें/कराएँ तथा अपने यहाँ आमंत्रित करके उनका अभिनन्दन भी करें, ताकि वे आगे भी इस कार्य को गति देते रहें। साथ ही आपके क्षेत्रों में भी यदि इस प्रकार का बलि विषयक कोई कार्य किया जाता पाएँ तो श्री पहाड़िया से या मुझसे भी सम्पर्क करके न्यायालयीन आदेश की एक प्रति एवं अन्य सामग्री भी प्राप्त करके अपने यहाँ के उच्च न्यायालय में एक जनहित याचिका लगवाकर अहिंसा का यशोगान कराने हेतु सार्थक प्रयास करें।

नितिन कुमार जैन, खरगापुर

मुनि आर्जवसागर सभागार का लोकार्पण

जयपुर के कीर्तिनगर स्थित श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में अक्षय तृतीया महापर्व को भगवान श्री आदिनाथ की अभिषेक पूजन पूर्वक आदिनाथ विधान, पूजा सहित आयोजन को सकल दिगम्बर जैन समाज ने बड़ी धूमधाम से मनाया। इस अवसर पर मुनिश्री आर्जवसागर सभागार का लोकार्पण मुनि श्री

इन्द्रनन्दी महाराज ससंघ के सानिध्य में श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर प्रबंधकारिणी समिति के पदाधिकारियों ने श्री महावीर कासलीवाल की अध्यक्षता में किया। कार्यक्रम के दौरान पूरा मंदिर प्रांगण भक्ति व उल्लास के रंग में डूबा रहा। मुनि श्री इन्द्रनन्दि महाराज एवं माता गुरुनंदिनी के सानिध्य में सभी कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज का भव्य समाधि दिवस समारोह

नसीराबाद, जिला-अजमेर में दिनांक 01 जून 2011 को गुरु नाम गुरु आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज का भव्य समाधि दिवस संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के परम शिष्य परम पूज्य मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज एवं क्षु. श्री हर्षितसागर जी महाराज के सानिध्य में बड़े हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर प्रातः स्थानीय समाज के साथ विभिन्न नगरों की जैन पाठशालाओं के विद्यार्थियों ने मुनिश्री के सान्निध्य में आचार्य ज्ञानसागर महाराज के समाधि स्थल से सल्लेखना स्थल तक प्रभातफेरी एक बड़े जुलूस के रूप में निकाली। देश के विभिन्न स्थानों से पधारे विद्वानों ने एवं वक्ताओं ने इस कार्यक्रम में गुरुणाम् गुरु आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज के जीवन के तथा आचार्य विद्यासागर जी महाराज के साथ गुरु-शिष्य संबंधित अनेक रोचक संस्मरण प्रसंगों से श्रोताओं को सुनाकर भाव विभोर किया।

इस अवसर पर मध्यान्ह में पाठशाला सम्मेलन आयोजित किया गया। विभिन्न पाठशालाओं के बालक/बालिकाओं ने आकर्षित एवं मनमोहक कार्यक्रमों, नाटक आदि को प्रस्तुत कर श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया। उपरोक्त कार्यक्रम की पूर्व शृंखला में 31 मई 2011 को नसियाजी, नसीराबाद में सकल दिगम्बर जैन समाज के द्वारा नसियाजी में विराजमान मूल नायक श्री 1008 शांतिनाथ भगवान के मोक्ष, तप एवं गर्भ कल्याणक का आयोजन मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज ससंघ के सानिध्य में अत्यंत हर्षोल्लास पूर्वक शांतिनाथ विधान पूजन के साथ का आयोजन सम्पन्न हुआ।

इस प्रकार समाधि दिवस समारोह कभी नहीं भूलने वाला एक एतिहासिक महोत्सव बन गया।

श्रुत संवर्द्धन संस्थान, मेरठ

28 अप्रैल से 7 मई 2011 तक ग्रीष्मकालीन श्रुत संवर्द्धन ज्ञान संस्कार शिक्षण शिविरों का आयोजन सागर नगर (म.प्र.) के 18 स्थानों पर संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की विदुषी शिष्या आर्यिका श्री 105 अकम्पमती माताजी के पावन सान्निध्य में किया गया । सामूहिक उद्घाटन 28 अप्रैल को किया गया। पूज्य माताजी ने कहा कि आज हमारे संस्कार विलुप्त होने जा रहे हैं। हमें अपने संस्कारों को सुरक्षित रखना है तभी हमारी संस्कृति सुरक्षित रहेगी।

7 मई को दिगम्बर जैन वर्णी भवन, मोराजी में आचार्य श्री विभव सागर जी महाराज के पावन सान्निध्य में इन शिविरों का सामूहिक समापन किया गया। समापन समारोह में कुण्डलपुर के बड़ेबाबा आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज एवं उपाध्याय श्री ज्ञानसागर जी महाराज के संयुक्त चित्र का अनावरण, दीप प्रज्जवलन किया गया। इन शिविरों में 3756 प्रतिभागीयों ने भाग लिए एवं 57 विद्वानों ने प्रशिक्षण कराया।

आकाश जैन, भदैनी, वाराणसी

भाव विज्ञान जैन धर्म प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

समय : 15 दिन अंक 100

❉ 20 प्रश्नों में से प्रत्येक प्रश्न पर 5-5 अंक समान हैं।

❉ इन प्रश्नों में से एक प्रश्न का उत्तर दो लाइनों में वाक्य सहित लिखना अनिवार्य है।

❉ उत्तर राष्ट्र भाषा हिन्दी में ही लिखें, लिखकर काटे या मिटाये जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।

सही उत्तर पर [✔] सही का निशान लगावें -

प्र.1 धर्म तीर्थ के प्रवर्तक को क्या कहते हैं ?

अरिहन्त [ ], तीर्थंकर [ ] सिद्ध [ ]

प्र. 2 तीर्थंकर के जन्म के पूर्व तीर्थंकर की माता कितने स्वप्नों को देखती हैं ?

14 [ ], 12 [ ] 16 [ ]

प्र.3 सौधर्म इन्द्र भरत क्षेत्र के तीर्थंकर का मेरु पर्वत के किस शिला पर जन्माभिषेक करता है?

पाण्डुकम्बला शिला [ ] रक्ताशिला [ ] रक्त कम्बला शिला [ ]

पाण्डुक शिला [ ]

प्र. 4 तीर्थंकर प्रभु क्या बोलकर केशलोंच करते हैं ?

णमो अरिहंताणं [ ] नमः सिद्धेभ्य [ ] कुछ भी नहीं [ ]

हाँ या ना में उत्तर दीजिये -

प्र.5 भ. शांतिनाथ जी के पिता श्री विश्वसेन जी थे। [ ]

प्र.6 तीर्थंकर नेमिनाथ जी का जन्म अयोध्या नगरी में हुआ था। [ ]

प्र.7 भ. आदिनाथ जी के समवसरण में 84 गणधर थे। [ ]

प्र.8 भ. शान्तिनाथ जी के वैराग्य का कारण उल्कापात था। [ ]

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

प्र.9 महावीर भगवान की शरीर की ऊँचाई .... थी।

[10 धनुष, 7 हाथ, 8 हाथ]

प्र.10 प्रद्युम्नकुमार .... थे।

[कामदेव, बलभद्र, नारायण]

प्र.11 अनन्तनाथ जी का दूसरा नाम .... था।

[सुविधिनाथ, महति, सिंहसैन्य]

कृपया यहाँ से निकालें

दो पंक्तियों में उत्तर दीजिये -

प्र.12 विदेह क्षेत्र में कितने कल्याणक वाले तीर्थंकर होते हैं ?

....

....

सही जोड़ी मिलायें :-

प्र.13 चक्रवर्ती	9
प्र.14 बलभद्र	सोलह भावना
प्र.15 तीर्थंकर प्रकृति संचय	समवसरण
प्र.16 कुबेर की एक प्रमुख रचना	12

सही (✔) या (✕) गलत का चिन्ह बनाइये :-

प्र.17 वीरोदय संस्कृत महाकाव्य चित्रालङ्कार काव्य है। [ ]

प्र.18 महाकवि आ. ज्ञानसागर जी का जन्म स्थान नसीराबाद था । [ ]

प्र.19 आचार्य ज्ञानसागर जी ने अपने शिष्य को गुरु बनाया था । [ ]

प्र.20 आचार्य ज्ञानसागर जी की समाधि में निर्यापकाचार्य विद्यासागरजी थे। [ ]

- -

प्रतियोगी-परिचय

भाव विज्ञान सदस्यता की रसीद क्रमांक :

नाम .... उम्र ....

पिता/माता/पति का नाम ....

नगर या गाँव का नाम ....

पता..

....

मोबाईल/फोन नं. ....

सदस्यों को भाव विज्ञान प्रेषित करते समय लिफाफे के पते पर रसीद क्रमांक का लेख भी किया जाता है।

भाव विज्ञान जैन धर्म प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

नियमावली :

1. उत्तर लिखने वाले या उसके पारिवारिक सदस्य की भाव विज्ञान पत्रिका संबंधी आजीवन सदस्यता होनी अनिवार्य है। एक परिवार से एक ही उत्तर पुस्तिका स्वीकार्य होगी। अन्य नहीं।
2. प्रश्न पत्र के पेपर पर ही उत्तर लिखकर भेजें। फोटो कॉपी मान्य नहीं होगी।
3. उत्तर पुस्तिका पर अंक देने का भाव उत्तर पुस्तिका में वर्णित उत्तरों की शुद्धता, लिखावट एवं उम्र पर निर्भर करेगा। अल्प उम्र वाले प्रतियोगी को प्रमुखता दी जावेगी।
4. उत्तर लिखकर काट दिये जाने पर या घिस दिये जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।
5. उत्तर पुस्तिका की प्रतियोगी को एक फोटोकॉपी करवा लेना चाहिये क्योंकि मुख्य उत्तर पुस्तिका में कोई गलती न हो एवं अगली भाव विज्ञान पत्रिका में आने वाले उत्तरों का प्रतियोगी मिलान कर सके।
6. पत्रिका पहुँचने के पन्द्रह दिनों के भीतर उत्तर अवश्य प्रेषित करें। पत्रिका प्रकाशित होने के एक माह के बाद प्राप्त उत्तर पुस्तिकाएँ प्रतियोगिता हेतु मान्य नहीं की जावेगी।
7. पुरस्कार की राशि मनीआर्डर या बैंक आदि से भेजी जावेगी। प्रतियोगी प्राप्त मूल्य का उपयोग अपने तीर्थ वंदना, पूजा द्रव्य दान, आहार दान, औषधदान, उपकरण दान, पाठशाला की यूनिफार्म आदि धर्म कार्य के द्रव्य में सम्मिलित कर सकते हैं।
8. अगली भाव विज्ञान पत्रिका में सभी श्रेणियों के पुरस्कार विजेताओं के नाम प्रकाशित किये जावेंगे।
9. उत्तर पुस्तिका डाक/पोस्ट से निम्न पते पर प्रेषित की जानी चाहिए।

डॉ. प्रोफेसर सुधीर जैन, 85, डी.के. कॉटेज, दानापानी रेस्टोरेंट के पास, ई-8 एक्सटेंशन, भोपाल (म.प्र.)

* **उपरोक्त प्रतियोगिता के बारे में हमारा उद्देश्य है कि बाल-युवा पीढ़ी भी स्वाध्याय के क्षेत्र में आगे बढ़े एवं घर-घर में चले धर्म संस्कार की पाठशाला।**

प्रथम पुरस्कार : 108 योग्य संख्यक मूल्य, द्वितीय पुरस्कारः 72 योग्य संख्यक मूल्य

तृतीय पुरस्कार : 57 योग्य संख्यक मूल्य

उत्तीर्ण प्रतियोगी परिचय

प्रथम श्रेणी

श्रीमती सीमा जिनेन्द्र जैन

द्वारा श्री ओमप्रकाश जैन, सी-103, अतिशय हरिमार्ग, जे.डी.ए. कालोनी, जयपुर (राज.)

द्वितीय श्रेणी

अर्पित द्वारा श्रीमती ऊषा जैन

37-ए, गौरी नगर, फ्रेंड्स कालोनी, वैशाली नगर, अजमेर (राजस्थान)

तृतीय श्रेणी

श्रीमती सुनीता देविंदर जैन

341, सेक्टर-15, पार्ट-1 गुड़गाँव (हरियाणा)

उत्तर पुस्तिका - मार्च 2011

1. वीरसेनाचार्य 2. मंगलाचरण 3. परमेष्ठी

4. चंवर, छत्र 5. नहीं 6. हाँ 7. हाँ 8. हाँ

9. प्राकृत 10. ओम ॐ 11. चार

12. मंगल पद का शाब्दिक अर्थ शास्त्रों में दो तरह से किया गया है-

1. (मंगल) मं-पापं, गल गालयतीति मंगलं- अर्थात् जो पापों को गलाये (नष्ट करें) इसे मंगल कहते हैं।

2. (मंगल) मंग-सुखं, ल-लातीति मंगलं। अर्थात् जो सुख को लाये या प्राप्त कराये उसे मंगल कहते हैं।

13. उपसर्ग अभाव 14. पसीना रहित होना 15. तीन कम नौ करोड़

16. णमोकार मंत्र की महिमा से 17. सही 18. गलत

19. गलत 20. सही

भाव विज्ञान परिवार

✳✳✳✳✳ शिरोमणी संरक्षक ✳✳✳✳✳

मेसर्स आर.के. ग्रुप, मदनगंज-किशनगढ़, अजमेर, ● श्री निर्मल कुमार झांझरी, डीमापुर (नागालैंड)

✳✳✳✳ परम संरक्षक ✳✳✳✳

● श्री गौतम काला, राँची ● श्री बुधराज जैन कासलीवाल, पांडीचेरी

✳✳✳ पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक ✳✳✳

● प्रबंधकारिणी समिति, श्री १००८ पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, कीर्तिनगर, जयपुर
● सकल दिगम्बर जैन समाज, दाँता रामगढ़, जिला सीकर ● श्री कुन्थीलाल, रमेशचंद, नरेश कुमार जैन गदिया, नसीराबाद (अजमेर)

✳✳ पुण्यार्जक संरक्षक ✳✳

● श्री नीरज S/o श्रीमती चन्द्रकला पाटनी, रांची ● सुशील कुमार, अभिषेक कुमार, रोहित कुमार जैन, पांडीचेरी
● श्री मिट्ठनलाल जैन, नई दिल्ली

✳ सम्मानीय संरक्षक ✳

● श्री वर्धमान विक्रमादित्य जैन, चैन्नई ● श्री पदमराज होळल, दावणगेरे ● श्री सोहनलाल कासलीवाल, सेलम ● श्री संजय सोगानी, राँची ● श्री आकाश टोंग्या, भोपाल ● कु. इन्द्रसेना जैन, जयपुर ● श्रीमती संगीता हरीश बजाज, टीकमगढ़ ● श्रीमती कमलाबाई अशोक जैन साहबजाज, अजमेर ● श्री बी.एल. पचन्ना, बैंग्लुरू ● श्री घनश्याम जैन, कृष्णा नगर, दिल्ली ● श्री कमलजी काला, जयपुर ● श्री अरुणकाला 'मटरू', जयपुर ● श्री महावीरप्रसाद संजयकुमार जैन, इस्पात एंटरप्राईजेस प्रा.लि., कलकत्ता ● श्री नरेश जैन, सूरत (दिल्ली वाले)

✳ संरक्षक ✳

● श्री विजय अजमेरा, रीवा ● श्री के. सी. जैन, डि. एक्साइज अधिकारी, छतरपुर ● श्री एस.एल. जैन (बागड़िया), जयपुर ● श्री गुणसागर ठोलिया, किशनगढ़-रेनवाल, जयपुर ● श्री अजित प्रसाद जैन सराफ, रेवाड़ी ● श्री विजयपाल जैन, भोलानाथ नगर, शाहदरा (दिल्ली) ● श्री दिगम्बर जैन तीर्थ बड़ा मंदिर, हस्तिनापुर (मेरठ) ● श्री संजय जैन, गुड़गांव ● श्रीमती सुषमा रवीन्द्र कुमार, गाजियाबाद ● श्री श्रेयांस कुमार पाटोदी, जयपुर ● श्रीमती अनिता पारस सौगानी, जयपुर ● श्री जितेन्द्र अजमेरा, जयपुर
● श्री ओम कासलीवाल, जयपुर ● श्री मंगलचंद हरकचंद मोतीलाल कमलचंद छाबड़ा, जयपुर ● श्री राकेश जैन, रोहिणी, दिल्ली ● श्री कल्याणमल झांझरी, कलकत्ता ● श्रीमती सुधा महेन्द्र कुमार जैन, भोपाल ● श्री विजय कुमार जैन, छाबड़ा, जयपुर ● श्री कस्तूरचंद सुरेश कुमार जैन, रामगंज मण्डी, कोटा

✳ विशेष सदस्य ✳

● श्री भागचन्द जैन, नसीराबाद, अजमेर

✳ आजीवन सदस्य ✳

दमोह	श्री नरेन्द्र जैन सतलू	श्री निर्मल जैन इटोरिया	श्री चंदूलाल दीपचंद काले
श्री यू.सी. जैन, एलआईसी	श्री संजय जैन, पथरिया	श्री राजेश जैन हिनोती	श्री पूनमचंद चंपालाल ठोले
श्री जिनेन्द्र जैन उस्ताद	श्री अभय कुमार जैन गुड्डे, पथरिया	**कोपरगाँव**	श्री अशोक चंपालाल ठोले

भाव विज्ञान परिवार

✳ आजीवन सदस्य ✳

श्री नितिन मदनलाल कासलीवाल
श्री चंपालाल दीपचंद ठोले
श्री अशोक केशरचंद पापड़ीवाल
श्री सुभाष भाऊलाल गंगवाल
श्री तेजपाल कस्तूरचंद गंगवाल
श्री सुनील गुलाबचंद कासलीवाल
श्री श्रीपाल खुशालचंद पहाड़े
श्री शिखरचंद अशोक कुमार लोहाड़े
श्री कुन्थुलाल रमेशचंद नरेश कुमार जैन, गदिया,

छतरपुर

श्री प्रेमचंद कुपीवाले
श्री चतुर्भुज जैन, सब इंजीनियर
श्री रतनचंद देवेन्द्र कुमार बस वाले
श्री कमल कुमार जतारावाले
श्री भागचन्द जैन, ललपुरावाले
श्री देवेन्द्र ड्योढ़िया
अध्यक्ष,चेलना महिला मंडल, डेरा पहाड़ी
अध्यक्ष, मरुदेवी महिला मंडल शहर
पंडित श्री नेमीचंद जैन
डॉ. सुरेश बजाज
श्री प्रसन्न जैन ''बन्टू''

टीकमगढ़

श्री विनय कुमार जैन
श्री सिंघई कमलेश कुमार जैन
श्री संतोष कुमार जैन, बड़माड़ई
श्री अनुज कुमार जैन
श्री सी.बी. जैन, मजना वाले
श्री जिनेन्द्र कुमार जैन, रामगढ़
श्री राजीव बुखारिया
श्री सुनील जैन, मालपीठा वाले
श्री विमल कुमार जैन,मालपीठा
श्री सोनलकुमार संतोषकुमार जैन, खिरियावाले

सीधी

श्री सुनील कुमार जैन, सीधी

ग्वालियर

श्रीमती ओमा जैन
श्रीमती केशरदेवी जैन
श्रीमती शकुन्तला जैन
श्री दिनेश चंद जैन
श्रीमती सुषमा जैन
श्री ब्र. विनोद जैन (दीदी)
श्रीमती सुप्रभा जैन
श्रीमती प्रमिला जैन
श्रीमती मिथलेश जैन
स.सि. श्री अशोक कुमार जैन
श्रीमती मीना जैन
श्रीमती पन्नी जैन, मोहना
श्रीमती मीना चौधरी
श्री निर्मल कुमार चौधरी
श्री कल्याणमल जैन
श्रीमती सूरजदेवी जैन
श्रीमती उर्मिला जैन
श्रीमती विमला देवी जैन
श्रीमती विमला जैन
श्रीमती मोती जैन
श्रीमती अल्पना जैन
श्रीमती रोली जैन
श्रीमती ममता जैन
श्रीमती नीती चौधरी
श्रीमती आभा जैन
श्रीमती सुशीला जैन
श्रीमती पुष्पा जैन
श्रीमती अंगूरी जैन
श्री ओ.पी. सिंघई
श्रीमती मंजू एवं शशी चांदोरिया
श्री सुभाष जैन
श्री खेमचंद जैन
श्री बसंत जैन

असम

वर्धमान इंग्लिश अकादमी, तिनसुखिया
श्री नाथूलाल जैन, नलबारी

जबलपुर

श्रीमती सितारादेवी जैन
श्री जरत कुमार जैन, डिस्ट्रिक्ट जज

अशोक नगर

श्री प्रमोद कुमार पुनीत कुमार जैन

भिण्ड

श्री सुरेशचंद्र जैन
श्री महेशचंद जैन पहाड़िया
श्री विजय जैन, रेडीमेड वाले
श्री संजीव जैन 'बल्लू'
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्री महावीर प्रसाद जैन
श्रीमती मीरा ध.प. श्री सुमत चंद जैन

जयपुर

श्री राजेश जैन (गंगवाल)
श्री रिखब कुमार जैन
श्री बाबूलाल जैन
श्री कैलाशचंद जी मुकेश छाबड़ा
श्री पदम पाटनी
श्री राजीव काला
श्री सुनील कुमार राजेश कुमार जैन
श्री पवन कुमार जैन
श्री धन कुमार जैन
श्री सतीश जैन
श्री अनिल जैन (पोत्याका)
श्रीमती शीला ड्योड़िया
श्रीमती शांतिदेवी सोध्या
श्री हरकचंद लुहाड़िया
श्रीमती शांतिदेवी बख्शी
श्रीमती साधना गोदिका
श्री राजकुमार लुहाड़िया
श्री दिनेश कुमार जैन
श्री विमल चन्द जैन
श्री प्रेमचंद काला
श्री उम्मेदमल जैन
श्री उत्तमचंद जैन
श्री पदम कुमार जैन
श्री भविष्य गोधा
श्री बृजमोहन जैन
श्री प्रेमचंद जी बैनाड़ा
श्री महावीर जी सोगानी
श्री संजय सोगानी
श्री अरूण कुमार सेठी
श्री विनोद पांडया
श्री वीरेन्द्र कुमार पांडया
श्री नरेन्द्र कुमार जैन
श्री कौशल किशोर जैन
श्री सुशील कुमार जैन
श्री ओम प्रकाश जैन
श्री रिषभ कुमार जैन
श्री वीरेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती सुशीला सोगानी
श्रीमती शीला जैन
श्रीमती बीना जैन
श्रीमती उन्नति पाटनी
श्रीमती सुनीता कासलीवाल
श्रीमती अनीता वैद्य
श्रीमती पदमा लुहाड़िया
श्रीमती सुनीता काला
श्री प्रमोद काला
श्रीमती निर्मला काला
श्रीमती मधुबाला जैन
श्रीमती हीरामणि जैन
सुश्री साक्षी सोनी
श्री महावीर कुमार कासलीवाल
श्री अनंत जैन
श्री रामजीलाल जैन
डॉ. पी.के. जैन
डॉ. डी. आर. जैन
श्री दिलीप जैन
श्री टीकमचंद बाकलीवाल
श्री हरीशचंद छाबड़ा
श्री विमल कुमार जैन गंगवाल
श्री पुष्पा सोगानी
श्री राजकुमार पाटनी
श्री श्रीपाल जैन
श्रीमती पूनम गिरिन्द्र तिलक
श्री पारस सोगानी
श्रीमती अरुणा अमोलक काला
श्री कपूरचंद जी लुहाड़िया
श्रीमती इंद्रा मनीष बज
श्री नरेन्द्र अजमेरा
श्री लाडूलाल जैन
श्रीमती रानीदेवी सुरेशचंद मौसा
श्रीमती आशा सुरेन्द्र कुमार कासलीवाल
श्रीमती आशा रानी सुरेश कुमार लोहाड़िया
श्रीमती बीना विमलकुमार पाटनी

भाव विज्ञान परिवार

✴ आजीवन सदस्य ✴

श्रीमती राखी आशीष सोगानी
श्रीमती चंद्रलेखा महावीरप्रसाद शाह
श्रीमती प्रमिला रूपचंद गोदिका
श्रीमती प्रतिभा प्रसन्न कुमार जैन
श्रीमती शांति देवी पांड्या
श्री हेमन्त कुमार जैन शाह
श्री धर्मचंद जैन
श्री मुरालीलाल गुप्ता
श्री पारसचंद जैन कासलीवाल कुम्हेर
श्री निर्मल कुमार पाटनी
श्री मनीष कुमार गंगवाल
श्री नरेन्द्र कुमार जैन
श्री हरकचंद छाबड़ा
श्री कुन्थीलाल जैन
श्री गोपाललाल जैन बड़जात्या
श्री महेन्द्र कुमार जैन साह
श्री सुरेन्द्र पाटनी
श्री सी.एल. जैन
श्री प्रदीप पाटनी
श्री लल्लू लाल जैन
डॉ .विनीत साहुला
श्री उत्तम चंद जैन
श्री मनोज जैन
श्री ज्ञानचंद जैन
श्री सुरेश चंद जैन
डॉ. श्रीमती चिमन जैन
श्रीमती प्रेम सेठी
श्रीमती नीता जैन
श्री सुरेशचन्द जैन
श्री राजेन्द्र जैन अग्रवाल
श्री हरीश कुमार जैन बाकलीवाल
श्री हंसराज जैन
श्रीमती अमिता प्रमोद जैन
श्री रीतेश बज
श्री अनिल कुमार बोहरा
श्री नवीनकुमार छाबड़ा
श्री कमलचंद जैन बाकलीवाल (अंधिका)
श्री महेन्द्र प्रकाश काला
श्री बाबूलाल सेठी
श्री प्रेमचंद छाबड़ा
श्री प्रदीप जैन बोहरा
डॉ. राजकुमार जैन
श्री अरुण शाह
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्री प्रकाशचंद जैन काला
श्री प्रकाशचंद जैन बड़जात्या
श्री कैलाश फूलचंद पांड्या
डॉ. विजय काला
श्री सम्पतलाल जैन
श्री जीवन्धर कुमार सेठी
श्री सुशील कुमार काला
श्री धर्मचंद रतनलाल जैन

मदनगंज-किशनगढ़

श्री स्वरूप जैन बज (जैन)
श्री नवरतन दगड़ा
श्री सुरेश कुमार जैन (छाबड़ा)
श्री प्रकाशचंद गंगवाल
श्री ताराचंद जैन कासलीवाल
श्री पदमचंद सोनी
श्री भागचंद जी दोशी
श्री धर्मचंद जैन (पहाड़िया)
श्री प्रकाशचंद पहाड़िया
श्री भागचंद जी अजमेरा

किशनगढ़-रेनवाल

श्री केवलचंद ठोलिया
श्री निर्मलकुमार जैन
श्री महावीर प्रसाद गंगवाल
श्री नरेन्द्र कुमार जैन
श्री धर्मचंद छाबड़ा जैन
श्री भंवरलाल बिनाक्या
श्री धर्मचंद पाटनी
सुश्री निहारिका जैन विनायका
श्रीमती मधु बिलाला
श्री पवन कुमार जैन बाकलीवाल
श्री राहुल जैन
श्री राकेश कुमार रांवका
श्री बिरदीचंद जैन सोगानी
श्री धर्मचंद अमित कुमार ठोलिया
श्री भागचंद अजमेरा

दौसा

श्री मनीष जैन लुहाड़िया

जोबनेर

श्री महावीर प्रसाद
श्री भागचंद बड़जात्या जैन
श्री भागचंद गंगवाल
श्री जितेन्द्र कुमार जैन
श्री संजय कुमार काला
श्री रमेश कुमार जैन बड़जात्या
श्री दीपक कुमार जैन शास्त्री
श्री रमेश कुमार जैन शास्त्री
श्री निलेश कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार पाटनी
श्री पदमचंद बड़जात्या जैन
श्री प्रेमचंद ठोलिया जैन
श्री शांतिकुमार बड़जात्या
श्री ताराचंद जैन (कामदार)
श्री मूलचंद जैन
श्रीमती सुनिता दिनेश कुमार बड़जात्या

इन्दौर

श्री आई.सी. जैन
श्री संदीप प्रेमचंद जैन

लखनऊ

स्व. डॉ. पी.सी. जैन

चैन्नई

श्री डी. भूपालन जैन
श्री सी. सेल्वीराज जैन
श्री ताराचंद जैन

नागौर

श्री प्रकाशचंद पहाड़िया, डेह

नसीराबाद

श्री महावीर प्रसाद चंद्रप्रकाश सेठी
श्री ताराचंद पाटनी
श्री शान्तिलाल पाटनी
श्री शान्तिलाल गोधा
श्री शान्तिलाल जैन सोगानी
श्री सुशील कुमार गदिया
एडवोकेट अशोक कुमार जैन
श्री टीकमचंद भागचंद जैन
श्री ताराचंद पारसचंद सेठी
श्री महावीर प्रसाद राजकुमार गदिया
श्री प्रकाश चंद जैन

अजमेर

श्री महावीर प्रसाद काला
श्रीमती सविता जैन, वीरगांव
श्रीमती स्नेहलता प्रेमचंद पाटनी
श्री रूपचंद छाबड़ा
श्री सुरेशचंद पाटनी
श्रीमती चंद्रा पदमचंद सेठी
श्री चंद्रप्रकाश बड़जात्या
श्री भागचंद निर्मल कुमार जैन
श्री निर्मलचंद जी सोनी
श्री नरेन्द्र कुमार प्रवीण कुमार जैन
श्रीमती सरोज डॉ. ताराचंद जैन
श्रीमती आशा तिलोकचंद बाकलीवाल
श्री नवरतनमल पाटनी
डॉ. रतनस्वरूप जैन
श्रीमती निर्मला प्रकाशचंद सोगानी
श्रीमती निर्मला सुशील कुमार जी पांड्या
श्रीमती शरणलता नरेन्द्रकुमार जैन
श्रीमती मंजु प्रकाशचंद जी जैन (काला)
श्री संदीप बोहरा
श्री राकेश कुमार जैन
श्री राजेन्द्र कुमार अजय कुमार दनगसिया
श्री पूरनचंद, देवेन्द्र, धीरेन्द्र कुमार सुथनिया
श्री नाथूलाल कपूरचंद जैन
श्रीमती चांदकंवर प्रदीप पाटनी
श्री विनोद कुमार जैन
श्री नरेश कुमार जैन
इंजीनियर श्री सुनील कुमार जैन
श्री जिनेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती उषा ललित जैन
श्री रमेश कुमार जैन
श्रीमती आशा जैन
श्री ताराचंद दिनेश कुमार जैन
श्री मनोज कुमार मुन्नालाल जैन
श्री ज्ञानचंदजी गदिया
श्री निहालचंद मिलापचंद गोटेवाला
श्री विशाल जैन कैलाश बड़जात्या

पिसानगन

श्री पुखराज पहाड़िया
श्री सज्जन कुमार दोशी
श्री अशोक कुमार राकेश कुमार दोशी

कुचामनसिटी

भाव विज्ञान परिवार

✳ आजीवन सदस्य ✳

श्री चिरंजीलाल पाटोदी
श्री सुरेश कुमार अमित कुमार पहाड़िया
श्री विनोद कुमार पहाड़िया
श्री लालचन्द पहाड़िया
श्री गोपालचंद प्रदीप कुमार पहाड़िया
श्री सुरेश कुमार पांड्या
श्री सुन्दरलाल रमेश कुमार पहाड़िया
श्री संजय कुमार महावीर प्रसाद पांड्या
श्री कैलाशचन्द प्रकाशचंद काला
श्री विनोद विकास कुमार झाँझरी
श्रीमती चूकीदेवी झाँझरी
श्री अशोक कुमार बज
श्री संतोष प्रवीण कुमार पहाड़िया
श्री वीरेन्द्र सौरभ कुमार पहाड़िया
श्री भंवरलाल मुकेश कुमार झाँझरी
श्री ओमप्रकाश शीलकुमार झाँझरी

भोपाल

डॉ. प्रो. पी.के. जैन, एमएएनआईटी
श्री एस.के. बजाज
श्री प्रसन्न कुमार सिंघई
श्री सुभाष चंद्र जैन
श्रीमती विमला रमेश चंद्र जैन
श्री सुनील जैन
श्री राजेन्द्र के जैन (चौधरी)
श्री आर.के. जैन, एक्साइज इंसपेक्टर
श्री तेजकुमार एस.एल. जैन
श्री विनय कुमार राजकुमार जैन
श्री सुशील जैन (सुशील आटो)

मुम्बई

श्री एन.के. मित्तल, सी.ए.
श्री हर्ष कोछल्ल, बी.ई.
श्री दीपक जैन
श्री धीरेन्द्र जैन
श्रीमती शर्मिला ललितकुमार बज जैन

संगमनेर, अहमदनगर

श्री जैन कैलासचंद दोघूसा, साकूर

सीकर

श्री महावीर प्रसाद पाटोदी
श्री महावीर प्रसाद जैन लालसवाले (देवीपुरा कोठी)
श्री ज्ञानचंद जैन, फतेहपुर शेखावटी

दाँता-रामगढ़

श्री विजय कुमार कासलीवाल, दाँता
श्री निशांत जैन, दाँता-रामगढ़
श्री राजकुमार काला, दाँता-रामगढ़
श्री विनोद कासलीवाल, दाँता
श्री सुनील बड़जात्या, दाँता-रामगढ़
श्री अमरचंद सेठी, दाँता-रामगढ़
श्री हरकचंद जैन झांझरी, दाँता
श्रीमती मायादेवी कैलाशचंद जैन

रानोली (सीकर)

श्री विनोद कुमार जैन
श्री राजकुमार छाबड़ा
श्री शान्तिलाल रांरा
श्री रतनलाल कासलीवाल
श्री सुभाषचंद छाबड़ा
श्री विकास कुमार काला
श्री ज्ञानचंद बड़जात्या
श्री गुलाबचंद छाबड़ा (डाकुड़ा)
श्री सुशील कुमार छाबड़ा

अलवर

श्री मुकेश चंद जैन
श्री सुंदरलाल जैन
श्री शिवचरनलाल अशोक कुमार जैन
श्री सुरेशचंद संदीप जैन
श्री राकेश नथ्थूलाल जैन
श्री चंद्रसेन जैन
श्री अंकुर सुभाष जैन
श्री बंशीधर कैलाशचंद जैन
श्री अशोक जैन
श्री राजेन्द्र कुमार जैन
श्री धर्मचंद जैन
श्री महावीर प्रसाद जैन
श्री प्रवीन कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्री दीपक चंद जैन
श्री राजीव कुमार जैन
श्री प्रेमचंद जैन
श्री अनंत कुमार जैन
श्री के.के. जैन
श्री सुशील कुमार जैन
श्री सुमेरचंद जैन
श्री अनिल कुमार जैन राखीवाला
एडवोकेट श्री खिल्लीमल जैन

सागर

श्री मनोज कुमार जैन
श्री प्रदीप जैन, इनकमटैक्स

तिजारा

श्री शिखरचंद जैन
श्री हुकुमचंद जैन
श्री आदीश्वर कुमार जैन
अध्यक्ष, श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मंदिर
श्री अशोक कुमार जैन
श्री मनीष जैन

पांडीचेरी

श्री पारसमल कोठारी
श्री गणपतलाल नेमीचन्द कासलीवाल
श्री नेमीचन्द प्रसन्न कुमार कासलीवाल
श्री चम्पालाल निरंजन कुमार कासलीवाल
श्री नथमल गौतम चन्द सेठी
श्री मेघराज जयराज बाकलीवाल
श्री आसूलाल भागचंद कासलीवाल
श्री मदनलाल राजेन्द्र कुमार कासलीवाल
श्री सोहनलाल अरिहंत कुमार पहाड़िया

रेवाड़ी

श्री सुरेशचंद जैन
श्री अजित प्रसाद जैन पंसारी
श्री पदम कुमार जैन
श्री नानकचंद जैन
श्री राजकुमार जैन
श्री रविन्द्र कुमार जैन
श्री अजय कुमार जैन
श्री पोलियामल जैन
श्री दालचंद जैन
श्री ब्रह्मचारी वीरप्रभु जैन
श्री सुभाषचंद जैन
श्री वीरेन्द्र कुमार जैन बजाज
श्री देवेन्द्र कुमार जैन सराफ
श्री राहुल सुपुत्र अशोक कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती चमनलता एवं कान्ता जैन
श्री देवेन्द्र कुमार बादनलाल जैन
श्री अरविंद जैन (प्रेसीडेंट)
श्री के. एस. जैन, धारूहेड़ा

दिल्ली

श्रीमती अनीता जैन
श्री विजेन्द्र कुमार जैन, शाहदरा
श्री एम.एल. जैन, शाहदरा
श्री अंकित कुमार जैन, शाहदरा
श्री लोकेश जैन, शाहदरा
श्रीमती राजरानी, ग्रीनपार्क
श्री इन्द्र कुमार जैन, ग्रीनपार्क
श्रीमती रेनू जैन, ग्रीनपार्क
श्रीमती पुष्पा जैन, ग्रीनपार्क
श्रीमती रुकमणी जैन, ग्रीनपार्क
श्रीमती हेमा जैन, ग्रीनपार्क

मेरठ

श्री हर्ष कुमार जैन
श्री देवेन्द्र कुमार जैन सराफ
श्री इंद्रप्रकाश जैन, मवाना

पटियाला

श्रीमती कमलारानी राजेन्द्र कुमार जैन

हस्तिनापुर

श्री विजेन्द्र कुमार जैन

राँची

श्री योगेन्द्र जैन

गाजियाबाद

श्री गौरव जे.डी. जैन
श्री विकास जैन
श्री राजकुमार जैन
श्री एन.सी. जैन
श्री निखिल जैन
श्रीमती सोनिया सुनील कुमार जैन
श्री अशोक कुमार कुंवरसेन जैन
श्री सुभाष जैन
श्री पवन कुमार जैन
श्री प्रवीन कुमार महेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती शारदा जैन
श्री डी.के. जैन
श्री अनिल कुमार जैन

भाव विज्ञान परिवार

✳ आजीवन सदस्य ✳

श्री जयकुमार नितिन कुमार जैन
श्री प्रवीण कुमार रोशनलाल जैन
श्री अशोक कुमार मालती प्रसाद जैन
श्री प्रदीप कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती अनुपमा राहुल जैन
श्री सुरेश चंद जैन
श्री विवेक जैन

गुड़गांव

एडवोकेट श्री कुंवर सेन जैन
श्री देवेन्द्र जैन
श्री रमेश चंद संदीप कुमार जैन
श्री श्रेयांस जैन
श्री महावीर प्रसाद जैन
श्रीमती सुषमा जैन
श्री सतीश चंद मयंक जैन
श्री रोबिन सी.के. जैन
श्री चंद्रप्रकाश मित्तल
श्रीमती विजय जैन
श्री कैलाश चंद जैन
श्री संजय जैन

पूर्णिया (बिहार)

श्री चांदमल जैन

कलकत्ता

श्री हरीशचंद्र जैन
श्री मनी खजांची

बेंग्लुरू

श्री प्रसन्न कुमार जैन छाबड़ा
श्री जयकुमार जैन
श्री रमेश कुमार जैन

ब्यावर

श्री दीपक कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार छाबड़ा
श्री धर्मचन्द रांवका जैन
श्री देवेन्द्र कुमार फागीवाला
श्री सारस मल झांझरी
श्री सुशील कुमार जैन बड़जात्या
श्री अशोक कुमार सोगानी
श्री भैरूलाल काला
श्री धरमचन्द जैन
श्री प्रबोध कुमार बाकलीवाल
श्री सुरेश चन्द बड़जात्या
श्री कमल कुमार दगड़ा
श्री शांतीलाल गदिया
श्री सुशील कुमार जैन
श्री पदम चन्द गंगवाल
श्री मयंक जैन
श्री मुकेश कुमार जैन
श्री चिरन्जी लाल पहाड़िया
श्री मनोज कुमार जैन
श्रीमती पुष्पा सोनी
श्री अशोक कुमार काला
श्री विजय कुमार फागीवाला
श्री पारसमल अजमेरा
श्री स्वरूपचन्द रांवका
श्री डॉ. दीपचन्द सोगानी
श्रीपाल अजमेरा
श्री घनश्याम जैन शास्त्री

सुजानगढ़

श्री पारसमल पाण्ड्या

मेड़ता रोड/सिटी (नागौर)

श्री जे.डी. जैन
श्री राजेन्द्र जैन
श्री अमरचंद धर्मचंद पाटनी
श्री रामरतन पाटनी

रामगंज मण्डी, कोटा

श्री शांतिलाल जैन
सुश्री कोमल महावीर जैन
श्री पदम कुमार विमल कुमार जैन
श्री रमेशचंद जी विनायका
श्री अमोलकचंद बागड़िया
श्रीमती उषा बागड़िया जैन
श्री शिखरचंद टोंग्या
श्री प्रकाश विनायका
श्री पदम कुमार राजमल जैन
श्री केवलचंद लुहाड़िया
श्री अजीत कुमार सेठी
श्री महावीर कुमार शाह
श्री अमर कुमार जैन
श्री प्रेमचंद सबड़ा
श्री जयकुमार विनायका
श्री नेमीचंद ठौरा
श्री नाथूलाल जैन
श्री सुशील कुमार जैन
श्री निर्मल कुमार नीलेश कुमार जैन
श्री निर्मल कुमार लालचंद जैन
श्री सुमेरमल पहाड़िया

सोनकच्छ, देवास

श्री पदमकुमार पियूष कुमार छाबड़ा

भाव विज्ञान पत्रिका की सदस्यता हेतु आवेदन-पत्र

रंगीन फोटो

मैं .... मधु (शहद), मांस, मद्य (नशा) का त्यागी, धर्म का अनुसरण करने वाला पिता/पति श्री ....
जिला .... प्रदेश ....से
भाव विज्ञान पत्रिका हेतु शिरोमणी संरक्षक रुपये 51000/-☐ पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक सदस्य रूपये 24500/-☐ परम संरक्षक रुपये 21000/-☐ पुण्यार्जक संरक्षक सदस्य रुपये 18,000/-☐ सम्मानीय संरक्षक सदस्य रुपये 11,000/-☐ संरक्षक सदस्य रुपये 5,100/-☐ विशेष सदस्य रुपये 3,100/-☐ आजीवन सदस्य रुपये 1,100/-☐ राशि देकर आजीवन सदस्यता स्वीकार करता/ करती हूँ।

मेरा पत्र व्यवहार का पता :- ....
....
जिला .... प्रदेश ....
पिनकोड .... एस.टी.डी. कोड ....
फोन नम्बर .... मोबाईल ....
ई-मेल .... है।
क्या आप अपने मोबाईल पर महाराज श्री के विहार/कार्यक्रम के फ्री मैसेज प्राप्त करना चाहेंगे ?(हाँ/नहीं)

दिनांक : हस्ताक्षर

कृपया यहाँ से निकालें

कार्यालयीन उपयोग हेतु

श्री/श्रीमति .... पिता श्री ....
को शिरोमणी संरक्षक/पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक/परम संरक्षक/पुण्यार्जक संरक्षक/सम्मानीय संरक्षक/संरक्षक/विशेष सदस्य/आजीवन सदस्यता क्रमांक ....प्रदान की जाती है।

दिनांक हस्ता. सम्पादक/प्रबन्ध सम्पादक

नोट : (1) ''भाव विज्ञान'' भोपाल के पक्ष में (ड्राफ्ट अथवा) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, टी.टी. नगर, भोपाल में नेट/कोर बैंकिंग सुविधा के अंतर्गत एस.बी. एकाउंट नं. **63016576171** एवं **IFS Code SBIN0030005** में नगद राशि सीधे जमा कर प्रकाशक को रसीद की छायाप्रति प्रेषित कर सदस्यता शुल्क की रसीद प्राप्त की जा सकती है।

सदस्यता आवेदन पत्र भेजन का पता :

''भाव विज्ञान'', एम-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल- 462 003 (म.प्र.) को प्रेषित करें।

भाव विज्ञान

(त्रैमासिक पत्रिका)

BHAV VIGYAN

आशीर्वाद एवं प्रेरणा

संत शिरोमणी आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के धर्मप्रभावक शिष्य
मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज

पत्रिका की विशेषताएं एवं उद्देश्य :

☛ विशिष्ट साधक आचार्यों या साधुओं के और डाक्ट्रेट व विशिष्ट विद्वानों के शिक्षाप्रद आलेखों, प्रवचनों एवं समीक्षाओं का प्रस्तुतिकरण ।

☛ सत् साहित्य समीक्षा।

☛ अहिंसात्मक जीवन शैली।

☛ व्यसन मुक्ति अभियान ।

☛ हिंसक पदार्थों व हिंसक सौंदर्य प्रसाधन का निरसन।

☛ नई पीढ़ी के लिए वैज्ञानिक शैली में जैन दर्शन का प्रस्तुतिकरण।

☛ रूढ़िवाद, मिथ्यात्व व शिथिलाचार रहित अनेकान्त, स्याद्वाद और सापेक्षवाद शैली में जैनत्व का प्रस्तुतिकरण।

☛ धार्मिक प्रश्नोत्तरी व काव्य संग्रह की प्रस्तुति।

☛ धार्मिक पर्व आयोजन व मुनि संघ समाचार प्रस्तुति इत्यादि।

नोट : **(1) ''भाव विज्ञान'' भोपाल के पक्ष में (ड्राफ्ट अथवा) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, टी.टी. नगर, भोपाल में नेट/कोर बैंकिंग सुविधा के अंतर्गत सेविंग बैंक एकाउंट नंबर-63016576171 एवं IFS Code SBIN0030005 में नगद राशि सीधे जमा कर प्रकाशक को रसीद की छायाप्रति प्रेषित कर सदस्यता शुल्क की रसीद प्राप्त की जा सकती है।**

सदस्यता आवेदन पत्र भेजन का पता

''भाव विज्ञान'' एम-8/4, गीतांजली काम्पलैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 (म.प्र.) को प्रषित करें।
सम्पर्क : डॉ. अजित कुमार जैन - 09425601161, डॉ. सुधीर जैन - 09425011357

लाडनू विहार की झलकियाँ

लाडनू में मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज
एवं उपस्थित जनसैलाब

लाडनू की जैन विश्वभारती का अवलोकन करते हुए
मुनि श्री १०८ आर्जवसागरजी महाराज
एवं साथ में डॉ. जिनेन्द्र जैन आदि

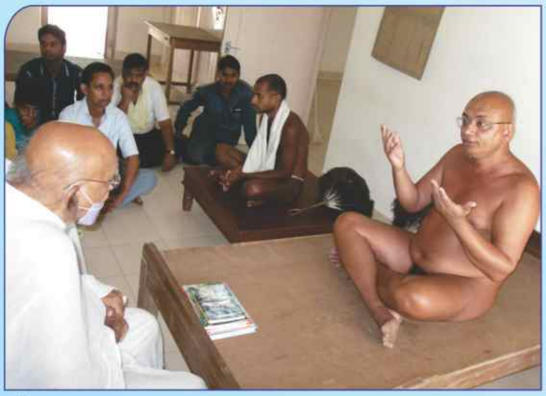

जैन विश्व भारती लाडनू में स्थानकवासी श्वेताम्बर
साधुओं को उपदेश देते हुए
मुनि श्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज ससंघ

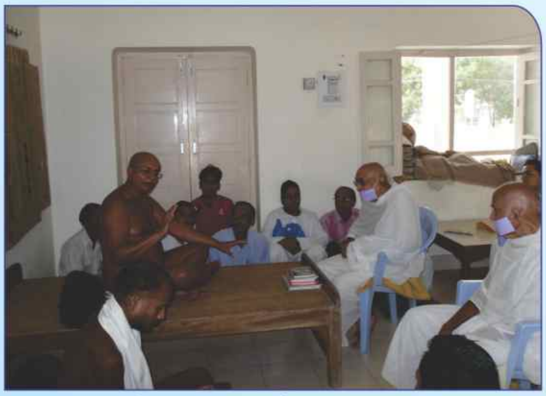

लाडनू में मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज
का प्रवचन सुनते
हुए श्वेताम्बर साधु एवं भक्तगण

मुनि श्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज लाडनू में प्रेक्षागृह का अवलोकन करते हुए

रजि. क्रं. MPHIN/2007/27127

लाडनू विहार की झलकियाँ

ग्रन्थागार का अवलोकन कर
बाहर प्रस्थान करते हुए
मुनिश्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज

लाडनू विश्वभारती में ग्रन्थागार
में विश्व विद्यालय की
प्रमुख साध्वी मुनि श्री से पुनः
पधारने का निवेदन करते हुए

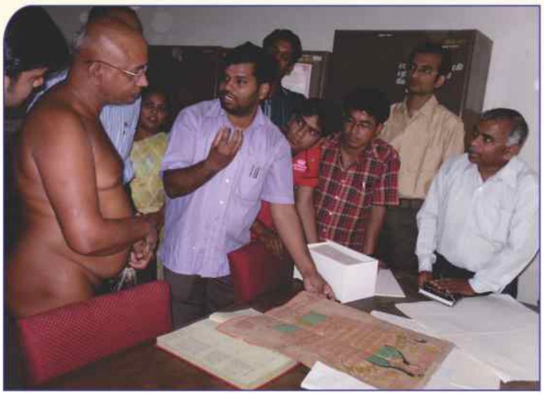

लाडनू में प्राचीन प्रतिलिपियाँ दिखलाते
हुए विश्वभारती के कार्यकर्तागण

पुण्यार्जक

सौजन्य से

श्री कुन्थीलाल रमेशचंद
नरेशकुमार जैन गदिया

नसीराबाद (अजमेर) मो.: 9214441275

स्वामी एवं प्रकाशक : श्रीमती सुषमा जैन द्वारा मुद्रक : पवन कुमार जैन द्वारा पारस प्रिन्टर्स, 207/4, सांईबाबा काम्प्लेक्स,
जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं एमआईजी-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित।
सम्पादक - श्रीपाल जैन 'दिवा,' एल-75, केशर कुंज, हर्षवर्धन नगर, भोपाल-3 (म.प्र.)